डाक पंजीयन क्र. L/ RNP/म.प्र./ मन्दसौर/122/ 2024- 26

ई-पेपर www.guruexpress.live

बात आपकी, शब्द हमारे

गुरु एक्सप्रेस

सुबह का अखबार

संपादक – आशुतोष नवाल

वर्ष 19 | अंक 274 | पृष्ठ 4 | मन्दसौर | रविवार 20 जुलाई 2025 | मूल्य 2 रुपया

स्वच्छता सर्वेक्षण रिजल्ट ने दिखाया आइना..!

करोड़ों खर्च फिर भी संभाग में नीचे से दूसरे नंबर पर

तकनीकी कारणों के साथ बचाव के उपाय ढूंढने में जुटे जिम्मेदार

मंदसौर, 19 जुलाई गुरु एक्सप्रेस। स्वच्छता सर्वेक्षण में नपा के अधिकारी हर साल की तरह इस बार भी मंदसौर को टाप-10 में लाने के दावे कर रहे थे। हालांकि इन दावों की पोल स्वच्छता सर्वेक्षण 2024 के रिजल्ट ने खोलकर आइना दिखा दिया। टॉप-10 में आने की बात तो दूर संभाग के अन्य जिलों से तुलना करें तो मंदसौर नीचे से दूसरे स्थान पर रहा है। सबसे नीचे शाजापुर है। जबकि, इस बार परिणाम में स्टेट रैंक की बात करें तो 15वें स्थान से खिसककर मंदसौर 78वें स्थान पर पहुंच गया। वहीं जोन रैंक के मामले में 51वें नंबर से खिसकर स्थिति 65वें नंबर पर आ गई। साढ़े 12 हजार अंकों में से सिर्फ 9 हजार 638 अंक ही हासिल हुए। सुधार के बजाए अभी भी नपा का अमला तकनीकी कारणों के साथ इसके बचाव के उपाय ढूंढने में लगा है। अब सीवरेज व एसटीपी के नहीं होने के कारण नंबर कम होना बताया जा रहा है। जबकि, पब्लिक टॉयलेट की सफाई से लेकर ट्रैचिंग ग्राउंड पर होने वाले डंप के कारण सर्वेक्षण में नंबर कम हुए।

बता दे कि हर माह सिर्फ संसाधनों से लेकर डीजल और कर्मचारियों के वेतन पर एक करोड से अधिक स्वच्छता के नाम पर नपा लगा रही है। स्वच्छता सर्वे के समय जागरुकता, पेंटिंग, रंगाई-पुताई से लेकर अन्य कामों पर भी एक करोड रुपये से अधिक हर बार नपा व्यय कर रही है। इतना अधिक धन खर्च करने के बाद भी सफाई शाखा से जुडी शिकायतों का ग्राफ कम नहीं हो रहा है। शहर में स्वच्छता के इस महामिशन का असर भी नहीं दिख रहा है। नपा स्वास्थ्य अधिकारी हेमचंद शर्मा का कहना है कि इस बार सीवरेज व एसटीपी को जोडा गया था। इस श्रेणी का रैकिंग पर असर पडा है। इसके कारण नंबर कम हुए। तो सभी श्रेणी पर असर आया है। व्यवस्था व सफाई नियमित रूप से हो रही है। नपा ने अन्य श्रेणी में अच्छे अंक हासिल किए है। जहां सुधार की जरूरत है उसे सुधारा भी जाएगा।

मंदसौर का पांच सालों में सबसे खराब प्रदर्शन...

वर्ष 2018	स्टेट रैंक 03	नेशनल वेस्ट जोन रैंक 24
वर्ष 2019	स्टेट रैंक 24	नेशनल वेस्ट जोन रैंक 104
वर्ष 2020	स्टेट रैंक 13	नेशनल वेस्ट जोन रैंक 50
वर्ष 2021	स्टेट रैंक 16	नेशनल वेस्ट जोन रैंक 63
वर्ष 2022	स्टेट रैंक 09	नेशनल वेस्ट जोन रैंक 32
वर्ष 2023	स्टेट रैंक 15	नेशनल वेस्ट जोन रैंक 51
वर्ष 2024	स्टेट रैंक 78	नेशनल वेस्ट जोन रैंक 65

सीवरेज व एसटीपी पर रैकिंग गिरने का दोष...

स्वच्छता सर्वेक्षण में रैकिंग गिरने का बडा कारण नगर पालिका अमला सीवरेज योजना और ट्रीटमेंट प्लांट नहीं होना बता रहा है। इस बार सर्वेक्षण में इन्हें भी कैटेगरी में शामिल किया गया था। पब्लिक टॉयलेट से लेकर रहवासी व व्यवसायीक से लेकर सभी श्रेणी में यह शामिल था कि सीवरेज या ट्रीटमेंट प्लांट से जुडाव है या नहीं। नहीं होने के कारण निकाय को नंबर नहीं मिले। इसका सीधे रूप से रैकिंग पर प्रभाव पडा।

संभाग में मंदसौर की स्थिति...

रैंक	सिटी	अंक
1	देवास	11692
16	नीमच	10297
32	रतलाम	10063
65	मंदसौर	9638
126	शाजापुर	8760

यहां रह गए पीछे...

स्वच्छता सर्वेक्षण 12 हजार 500 अंकों पर हुआ था। इसमें हर एक के लिए अलग कैटेगरी तय की गई थी। सभी में मिलाकर मंदसौर को 9 हजार 638 अंक मिले। इसमें मंदसौर का सबसे खराब प्रदर्शन पब्लिक टॉयलेट की सफाई में रहा। इसके अलावा ट्रैचिंग ग्राउंड पर होने वाले काम में बायो रेमिडेशन डंप ने भी रैकिंग गिराई। पब्लिक टॉयलेट की सफाई में सिर्फ 67 प्रतिशत नंबर मिले तो बायो रेमिडेशन में 75 प्रतिशत अंक मिले है। इसकेअलावा घर-घर कचरा संग्रहण से लेकर रहवासी व व्यवसायीक क्षेत्र में सफाई के अलावा जलीय संरचनाओं की सफाई के साथ वेस्ट जनरेशन एंड प्रोसेसिंग सभी श्रेणी में 100-100 प्रतिशत अंक मिले है।

जिले में अब तक 13 इंच बारिश

भानपुरा में 36 इंच पार, शहर में 17 इंच से आगे बढ़ा आंकड़ा

मंदसौर, 19 जुलाई गुरु एक्सप्रेस। जिले में बारिश का दौर कभी झमाझम तो कभी बूंदाबांदी के रूप में जारी है। शनिवार को भी दिनभर बादल छाए रहे। रुक रुक कर बारिश का दौर भी चलता रहा। इधर मंदसौर जिले में औसत 13 इंच बारिश दर्ज की गई है। जबकि, भानपुरा की बात करें तो बारिश का आंकडा 36 इंच को पार कर गया है। मंदसौर में शहर में अब तक 17 इंच से ज्यादा बारिश दर्ज की गई हैं। इधर रविवार को भी बारिश का अलर्ट जारी किया गया है।

प्रदेश की बात करें तो मध्यप्रदेश में बारिश का स्ट्रॉन्ग सिस्टम एक्टिव है। इस वजह से शुक्रवार को छतरपुर, टीकमगढ़, सतना, गुना समेत कई जिलों में बाढ जैसे हालात रहे। कई गांव पानी में डूबे रहे तो डैम ओवरफ्लो हो गए। शनिवार को सिस्टम कमजोर हुआ, लेकिन ग्वालियर समेत 16 जिलों में बाढ का खतरा बना रहा। जिन जिलों में बाढ का खतरा है, उनमें ग्वालियर, छतरपुर, दमोह, कटनी, पन्ना, सागर, सतना, टीकमगढ़, अशोकनगर, दतिया, गुना, मुरैना, राजगढ़, श्योपुर, शिवपुरी और विदिशा जिले शामिल हैं। यहां शुक्रवार को भारी बारिश का दौर चला। वहीं, रविवार को 14 जिलों में भारी बारिश का अलर्ट है। इनमें ग्वालियर, मुरैना, श्योपुर, नीमच, मंदसौर, रतलाम, झाबुआ, आगर-मालवा, राजगढ़, मऊगंज, सीधी, सिंगरौली, डिंडौरी और अनूपपुर शामिल हैं। अगले 24 घंटे में यहां साढे 4 इंच तक पानी गिर सकता है।

चलती ट्रेन से गिरा युवक, सिर में आई चोट

महाराष्ट्र जा रहा था घायल, अस्पताल पहुंचाया

मंदसौर, 19 जुलाई गुरु एक्सप्रेस। भीलवाडा से महाराष्ट्र जा रही हैदराबाद सुपरफास्ट एक्सप्रेस ट्रेन से एक यात्री शुक्रवार और शनिवार की दरमियानी रात गिर गया। घटना पिपलियामंडी स्टेशन से कुछ दूरी पर स्थित पुलिया के पास रात करीब 11:30 बजे की है। प्राप्त जानकारी के अनुसार 35 वर्षीय बाबूलाल निवासी भीलवाडा महाराष्ट्र में ट्रैक्टर चलाने का कार्य करता है। वह ट्रेन से सफर कर रहा था, इसी दौरान वह पिपलिया मंडी स्टेशन से पहले ट्रेन से नीचे गिर गया और गंभीर रूप से घायल हो गया। स्थानीय लोगों की मदद से घायल बाबूलाल को पिपलिया मंडी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लाया गया, जहां प्राथमिक उपचार के बाद उसे मंदसौर के बडे अस्पताल रेफर कर दिया गया। बाबूलाल के सिर में गंभीर चोट है और वह फिलहाल बेहोशी की हालत में है। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची। सहायक उप निरीक्षक हरिशंकर खराडी ने बताया कि घायल को 108 एम्बुलेंस के जरिए अस्पताल लाया गया है। प्रारंभिक जांच में उसके शराब के नशे में होने की बात सामने आ रही है। फिलहाल मामले की जांच की जा रही है। बाबूलाल के होश में आने के बाद उससे पूछताछ की जाएगी।

पूर्व विधायक के पुत्र सहित तीन गन डीलर गिरफ्तार

* अब तक 15 सप्लायर सलाखों के पीछे * सलमान-अंकल गैंग का सफाया करने में जुटी पुलिस

मंदसौर, 19 जुलाई गुरु एक्सप्रेस। समीपस्थ राजस्थान के प्रतापगढ जिले की पुलिस द्वारा 28 जून को हथियार सप्लायर राकेश राठौर की

गिरफ्तारी के साथ एक बडे हथियार तस्कर गिरोह पर पुलिस की नजर पडी। पहले आरोपी से एक ऑटोमेटिक देशी पिस्टल और दो खाली मैगजीन बरामद की गई। राकेश की निशानदेही पर 02 जुलाई को मध्यप्रदेश के नागदा निवासी गैंगस्टर सलमान उर्फ सलमान लाला को बांसवाडा जैल से प्रोडक्शन वारंट पर लाया गया। सलमान के पास से पुलिस ने हथियारों का जखीरा 14 अवैध हथियार और 1860 कारतूस बरामद किए। सलमान पर आरोप है कि उसने अपने पिता की आपराधिक विरासत को हथियार तस्करी से आगे बढाया। वह जैल में रहते हुए राजस्थान, मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश के अपराधियों के लिए हथियारों का नेटवर्क संचालित कर रहा था। सामने आया कि उत्तरप्रदेश के कुछ लाइसेंसी गन हाउस संचालक फर्जी लाइसेंसों के जरिए हथियार और कारतूस अपराधियों को बेच रहे थे। इस नेटवर्क की डोरें मथुरा और मैनपुरी से जुडी हुई थीं। एजीटीएफ और प्रतापगढ पुलिस की संयुक्त टीम ने 18 जुलाई को तीन संचालकों को गिरफ्तार किया। इनमे कमल सोलंकी पिता जगदीश सिंह सोलंकी निवासी बेवर, मैनपुरी, नवीन पोईया पिता अजय कुमार पोईया निवासी राधिका विहार, मथुरा, गोपाल शर्मा उर्फ जोली पिता नंदलाल शर्मा, निवासी डेम्पियर नगर, मथुरा शामिल हैं। इनमें सबसे चौंकाने वाला नाम था नवीन पोईया, क्योंकि उसके पिता अजय कुमार पोईया उत्तर प्रदेश की गोवर्धन विधानसभा से दो बार भाजपा से विधायक रह चुके हैं। यानी यह मामला सिर्फ अपराध नहीं, बल्कि राजनीति से भी जुड़ गया है। इन गन हाउस संचालकों ने अंकल गिरोह के सदस्यों राहुल, सागर और नितिन को फर्जी लाइसेंस पर कारतूस और हथियार बेचने की बात स्वीकार की है। यही हथियार प्रवीण वर्मा उर्फ अंकल और जितेंद्र सिंह उर्फ जीतू के माध्यम से सलमान तक पहुंचाए गए।

सलमान और राकेश से पूछताछ में पुलिस को बडी सूचनाएं मिलीं, इनके आधार पर पुलिस ने कई अन्य तस्करों और सप्लायरों को भी गिरफ्तार किया। 03 जुलाई को धीरेंद्र, कुंवरपाल सिंह और जीतू बिलोनी, 07 जुलाई को रमाशंकर लोधी (गन हाउस संचालक, एटा से), 08 जुलाई को प्रवीण वर्मा उर्फ अंकल (गिरोह का मास्टरमाइंड, लखनऊजैल से), 09 जुलाई को सद्दाम (जोधपुर जेल से), 10 जुलाई को गुलाम हुसैन (फिरोजाबाद से), 14 जुलाई को राहुल, सागर और नितिन (फिरोजाबाद जैल से) गिरफ्तार किए गए। इनमें राहुल का लाइसेंसी गन हाउस वर्ष 2009 में सील हो गया था। लेकिन, वह अब भी अवैध रूप से हथियार सप्लाई कर रहा था। पुलिस ने सभी को विभिन्न जैलों से प्रोडक्शन वारंट पर गिरफ्तार किया।

पूरे ऑपरेशन को एडीजी दिनेश एमएन, डीआईजी योगेश यादव, एजीटीएफ प्रभारी सिद्धांत शर्मा और प्रतापगढ एसपी विनीत कुमार बंसल के नेतृत्व में अंजाम दिया गया। थाना छोटीसादडी की टीम में एसएचओ प्रवीण टांक, एसआई नारायणलाल, एएसआई शिवराम, हेड कांस्टेबल महेश और सुरेश आदि शामिल थे। एजीटीएफ जयपुर टीम में सुभाष सिंह, शैलेन्द्र शर्मा, अरुण कुमार, मदनलाल, बृजेश कुमार, चालक सुरेश कुमार आदि ने पूरी मुस्तैदी से काम किया।

मामला बीजेपी नेता की हत्या का...

क्या अधिकारी पर होगी कार्यवाही..?

मंदसौर, 19 जुलाई गुरु एक्सप्रेस। विगत दिवस बीजेपी नेता की हत्या के मामले ने राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्र में काफी सुर्खिया बटोरी। हालांकि, एक अच्छे कार्यकर्ता को खोने का दु:ख सभी को होता हैं और होना भी चाहिये। लेकिन, हत्यारो तक पहुचने की पहली सीढी हमेशा से ही नारी शक्ति रही हैं। इस मामले में भी पुलिस ने जब नारी शक्ति की कॉल डिटेल निकाली तो उसमे सबसे ज्यादा कॉल एक अधिकारी के निकले। इसलिये यह कहा जा रहा हैं कि कहीं मामले में अधिकारी का ही हाथ तो नहीं है? आखिर बीजेपी नेता की हत्या में किसके हाथ सने है। क्योंकि जिस पर शक जा रहा हैं उसे तो अधिकारी भी ताज तक की सैर करा आये है....!

मंदसौर, 19 जुलाई गुरु एक्सप्रेस। शहर में बारिश के मौसम के दौरान श्वानों की गतिविधियों में तेज़ी देखी जा रही है, जिससे आम जनजीवन प्रभावित हो रहा है। हाल ही में रामटेकरी स्थित श्री सिद्ध चक्र विहार कॉलोनी और भागवत नगर क्षेत्र में श्वानों द्वारा बच्चों को काटने की दो घटनाएं सामने आई हैं। आज सुबह स्कूल जा रहे एक बच्चे पर आवारा श्वान ने हमला कर दिया, जिससे उसे गंभीर चोटें आईं। इसी क्षेत्र में बीती शाम भी एक अन्य बच्चे को श्वान ने काटा था।

स्थानीय नागरिकों का कहना है कि यह स्थिति अब चिंताजनक होती जा रही है। वर्षा ऋतु के दौरान श्वानों का सहवास काल होता है, जिससे वे अधिक आक्रामक और उत्तेजित हो जाते हैं। ऐसे में सडक पर घूमते बाजारू श्वान (कुत्ते) अक्सर राहगीरों, विशेषकर बच्चों और बुजुर्गों को निशाना बना लेते हैं। स्थानीय निवासियों ने नगर पालिका परिषद से मांग की है कि शहर में श्वानों (कुत्तों)की संख्या नियंत्रित करने के लिए नसबंदी अभियान को तेज़ी से चलाया जाए। लोगों का कहना है कि यदि समय रहते उचित कदम नहीं उठाए गए, तो डॉग बाइट की घटनाएं और बढ़ सकती हैं, जिससे जान-माल की हानि हो सकती है। नगर पालिका पर सवाल उठते हुए नागरिकों ने कहा कि केवल चेतावनी या अस्थायी पकड अभियान से समाधान नहीं निकलेगा। उन्हें स्थायी और मानवीय समाधान की ओर कदम बढ़ाना चाहिए, जिसमें नसबंदी, वैक्सीनेशन और पुनर्वास योजनाएं शामिल हों। वहीं, दूसरी ओर कुछ एनिमल एक्टिविस्ट्स द्वारा श्वानों (कुत्तों) को पकडने और नसबंदी की प्रक्रिया का विरोध भी किया जा रहा है। लेकिन स्थानीय लोग इस विरोध को राजनीति से प्रेरित बता रहे हैं। नागरिकों का कहना है कि मानव जीवन की रक्षा भी उतनी ही आवश्यक है जितनी पशु अधिकारों की।

श्वानों (कुत्तों)के बढ़ते हमलों से सहमा मंदसौर

नगर पालिका से नसबंदी, वैक्सीनेशन और पुनर्वास योजनाएं अभियान चलाने की मांग तेज

यदि एनिमल वेलफेयर संगठन श्वानों (कुत्तों)की सुरक्षा की बात करते हैं, तो उन्हें उन इंसानों की सुरक्षा पर भी ध्यान देना चाहिए जो इन हमलों के शिकार हो रहे हैं। मंदसौर नगर पालिका परिषद के अधिकारियों से उम्मीद है कि वे इस गंभीर समस्या पर शीघ्रता से संज्ञान लेंगे और नसबंदी अभियान को प्राथमिकता देते हुए शहर को श्वान आतंक से मुक्ति दिलाएंगे। साथ ही जनसहयोग से इस अभियान को सफल बनाने का प्रयास करेंगे।

रतलाम- नीमच के बीच डबल लाइन कार्य...

मेजर ब्लॉक के कारण चार ट्रेनें होगी प्रभावित

मंदसौर, 19 जुलाई गुरु एक्सप्रेस। वेस्टर्न रेलवे रतलाम डिवीजन (मंडल) के रतलाम- नीमच सेक्शन के बीच डबलिंग कार्य चल रहा है। सेक्शन के बीच ढोढर-कचनारा-दलौदा रेल सेक्शन के दोहरीकरण कार्य के लिए प्रस्तावित मेजर ब्लॉक के कारण रतलाम डिवीजन की चार ट्रेनें प्रभावित होगी। आज 20 जुलाई को उज्जैन से चलने वाली गाडी संख्या 69231 उज्जैन चित्तौडग़ढ मेमू रतलाम स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी। रतलाम से चित्तौडग़ढ के बीच निरस्त रहेगी। 20 जुलाई को चित्तौडग़ढ से चलने वाली गाडी संख्या 69232 चित्तौडग़ढ उज्जैन मेमू रतलाम से शॉर्ट ऑरिजिनेट होगी। चित्तौडग़ढ से रतलाम के बीच कैंसिल रहेगी।

नीमच रेलवे स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट- 19 जुलाई को यमुना ब्रिज से चलने वाली गाडी संख्या 19818 यमुना ब्रिज रतलाम एक्सप्रेस, नीमच रेलवे स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट हुई। नीमच से रतलाम के बीच कैंसिल रही। 20 जुलाई को रतलाम से चलने वाली गाडी 19327 रतलाम उदयपुर सिटी एक्सप्रेस, नीमच से चलेगी। रतलाम से नीमच के बीच कैंसिल रहेगी।

स्कूल बस पलटी, दो बच्चे मामूली घायल

मंदसौर, 19 जुलाई गुरु एक्सप्रेस। शनिवार को दलौदा के एक निजी स्कूल की बस पलट गई। हालांकि इसमें किसी बच्चे को गंभीर चोट नहीं आई है। दो बच्चों को मामूली चोट लगी है।

मिली जानकारी के अनुसार सांई पब्लिक स्कूल की बस आज क्षेत्र में स्कूल पहुंचते समय अनियंत्रित होकर पलट गई। सूचना मिलने के बाद तहसीलदार रोहित राजपूत सहित पुलिस मौके पर पहुंची। बाद में बस को थाने ले जाया गया।

ड्राइवर फोन से बात कर रहा था अचानक संतुलन बिगडने से बस पलटी खाई इसमें आठ बच्चों को हल्की-फुल्की चोटें आई जिनको धुंधडका अस्पताल भेजा गया। सभी बस संचालकों को बुलाकर निर्देशित करेंगे व समझाइश देंगें नहीं मानें तो कारवाई भी करेंगे।

रोहित सिंह राजपूत नायब तहसीलदार धुंधडका

तनाव देने लगा संपदा-2.0

विधिक अनुमतियां नहीं तो रोक रहा सॉफ्टवेयर, नहीं हो रहा रजिस्ट्रेशन

भोपाल, 19 जुलाई गुरु एक्सप्रेस। संपदा-2.0 सॉफ्टवेयर में वैसे तो कई खामियां उभरकर आई है। लेकिन, भू माफियाओं के लिए यह सिरदर्द साबित होने लगा है। एक तरफ जहां प्रशासन ने अवैध कॉलोनियों में खरीदी गई संपत्ति की रजिस्ट्री पर रोक लगा दी है, वहीं भूमाफिया पंजीयन कार्यालय में रजिस्ट्री के लिए आवेदन तो कर रहे हैं। लेकिन, कई कमियों के चलते हो नहीं पा रही हैं। संपदा-2.0 सॉफ्टवेयर में खसरा नंबर दर्ज करते ही प्रापर्टी की पूरी जानकारी ऑनलाइन दिखने लगती है। इससे पता चल जाता है कि यह प्रापर्टी किसकी है, कहां है और किसके द्वारा बेची गई है। साथ ही उसके बेचने वाले कॉलोनाइजर ने अनुमतियां ली हैं या अवैध रूप से प्रापर्टी बेची गई है, इसका भी पता चल जाता है। यही कारण है कि अवैध कॉलोनियों में होने वाली भूखंडों की रजिस्ट्री नहीं हो पाती है। अप्रैल 2025 से संपदा-2.0 सॉफ्टवेयर लागू किया जा चुका है। इसके तहत सिर्फ ऑनलाइन ही प्रापर्टी की रजिस्ट्री की जा सकती है। इसमें रजिस्ट्री के लिए सभी तरह के पात्र दस्तावेज होना जरूरी है। यदि एक भी दस्तावेज कम होता है तो रजिस्ट्री प्रक्रिया पूरी तरह से रुक जाती है। बता दें कि संपदा-2.0 साफ्टवेयर में रजिस्ट्री के लिए दस्तावेजों का प्रारूप तय है। इसमें खरीदी जा रही प्रापर्टी की जानकारी भरकर रजिस्ट्री की प्रति तैयार की जाती है।

ये दस्तावेज नहीं होने पर रुक जाती है रजिस्ट्री...

* टाउन एंड कंट्री प्लानिंग (टीएंडसीपी) * डायवर्सन प्रमाणपत्र * अनापत्ति प्रमाणपत्र * लेआउट प्लान * मूलभूत सुविधाओं का शपथपत्र।

यह है संपदा-2.0 की खासियत...

* संपदा-2.0 में रजिस्ट्री सर्च का प्रविधान है। रजिस्ट्री में आईडी नंबर होता है। * रजिस्ट्री कराते समय प्रापर्टी की आइडी अनिवार्य रहती है, इसमें प्रापर्टी की पूरी जानकारी होती है। * पूर्व में अगर कोई खरीदार था तो उसकी जानकारी भी इसमें रहेगी। * भूखंड, फ्लैट का आकार, कितनी मंजिल पर है, कार्नर या अन्य जानकारी आसानी से मिल जाती है। * दस्तावेज या अनुमति नहीं होती तो रजिस्ट्री प्रक्रिया रुक जाती है।

इनका कहना...

यह सही है कि संपदा-2.0 सॉफ्टवेयर सिर्फ प्रमाणित और सही दस्तावेजों के आधार पर ही प्रापर्टी का पंजीयन करता है। इसमें प्रापर्टी की जानकारी दर्ज करते ही राजस्व सहित अन्य विभागों से ली गई अनुमतियों का पता चल जाता है। यदि कोई भी दस्तावेज या अनुमति नहीं होती है तो रजिस्ट्री प्रक्रिया स्वत: रुक जाती है।

अमित तोमर
महानिरीक्षक पंजीयन, भोपाल

विचार-मंथन

मुफ्त बिजली नहीं, मुद्दों की बिजली चाहिए...

पिछले कुछ वर्षों से देश के राजनीतिक दलों के लिए जैसे-जैसे वास्तविक मुद्दों पर आम जनता का समर्थन हासिल करना मुश्किल होता गया है, लोगों के सामने कोई सुविधा या सामान मुफ्त देने का वादा करके उन्हें अपनी ओर आकर्षित किया जाने लगा है। वोट हासिल करने की मंशा से स्कूटी, टीवी या लैपटाप या फिर कुछ राशि देना हो या फिर कोई अन्य सामान, मकसद यह होता है कि लोगों को मुफ्त कोई सुविधा मुहैया कराने का वादा किया जाए, ताकि वे मुद्दा आधारित राय बनाने की ओर ध्यान न दें। यही वजह है कि लगभग हर चुनाव के पहले जनता को कोई सुविधा मुफ्त दिलाने के लिए राजनीतिक दलों के बीच एक तरह से होड़ लग जाती है। हालांकि इस तरह के चलन ने लोकतांत्रिक मूल्यों को गहरे स्तर पर प्रभावित किया है और इससे लोभ-आधारित मतदान की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलने के खतरे पैदा हुए हैं। यों इस मसले पर सुप्रीम कोर्ट भी कह चुका है कि सरकारी धन का उपयोग बुनियादी ढांचे को मजबूत बनाने और विकास कार्यों में होना चाहिए, न कि चुनावों में वोट बटोरने की मंशा से मुफ्त की सौगातों पर खर्च करने के लिए। विडंबना है कि एक ओर सरकारें जन-कल्याण कार्यक्रमों के लिए धन जारी करने को लेकर कई तरह के बहाने बनाती रहती हैं, दूसरी ओर सत्ता में वापसी या उसे हासिल करने के लिए व्यापक पैमाने पर मुफ्त की कोई सुविधा मुहैया कराने के वादे किए जाते हैं। एक तरह से यह जनता को दिया जाने वाला लालच है, जिसके जरिए बुनियादी सुविधाओं और अन्य जरूरी मुद्दों पर पर्दा डाला जाता है। हाल के वर्षों में चुनावों में जीत हासिल करने के लिए अमूमन हर पार्टी ने इस मुफ्त के औजार का इस्तेमाल किया है और बिहार में नीतीश कुमार की सरकार अब इसका

अपवाद नहीं है। गौरतलब है कि गुरुवार को बिहार सरकार ने आम घरेलू उपभोक्ताओं को एक सौ पच्चीस यूनिट तक मुफ्त बिजली देने की घोषणा की है। यह फैसला अगले महीने से लागू हो जाएगा। इससे पहले नीतीश कुमार ने सामाजिक सुरक्षा के तहत मिलने वाली पेंशन की राशि में भी बढ़ोतरी कर दी थी। जाहिर है, बिहार में इस तरह की घोषणाओं की पृष्ठभूमि में अगले कुछ महीने के भीतर होने वाले विधानसभा चुनाव हैं। हालांकि बिजली मुफ्त मुहैया कराने के मसले पर नीतीश कुमार की राय अलग थी, लेकिन ऐसा लगता है कि अब उन्हें भी जनता के सामने मुफ्त की रेवड़ियों का सपना दिखाने में कोई हिचक नहीं हो रही। आखिर क्या कारण है कि बिहार सहित देश भर में जहां भी इस तरह के मुफ्त की सौगात जनता को देने के वादे किए जाते हैं, उनका समय हर बार चुनाव से पहले का वक्त होता है! सड़क, शिक्षा-व्यवस्था, रोजगार आदि के मसले पर खर्च का सवाल आते ही धन की कमी का रोना वाली सरकारों को अपने अधिकार के क्षेत्र के सभी लोगों के लिए किसी सुविधा को मुफ्त करने का वादा करने में कोई हिचक नहीं होती। जबकि अगर न्यायपूर्ण आय और उचित खर्च के स्तर को बनाए रखा जाए, रोजगार के सवाल पर ईमानदार इच्छाशक्ति से काम किया जाए, तो लोगों की क्रयशक्ति को इतना मजबूत जरूर बनाया जा सकता है कि उन्हें मुफ्त सौगात की जरूरत नहीं पड़े। अफसोस यह भी है कि लोगों की आर्थिक स्थिति में सुधार करने के बजाय सरकारें उनमें परनिर्भरता की आदत डालने में ज्यादा रुचि दिखा रही हैं। इस क्रम में जनकल्याण की जिम्मेदारी के तहत किए जाने वाले कार्यों और मुफ्त की रेवड़ियों में फर्क मिटाने की कोशिश की जा रही है।

पंच परिवर्तन से बदल जाएगा समाज का चेहरा-मोहरा

प्रो. संजय द्विवेदी

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपने शताब्दी वर्ष में पंच परिवर्तन का जो संकल्प लिया है,वह भारत की चिति और उसकी स्मृति को जागृत करने का काम करेगा। राष्ट्रीय चेतना का स्तर बढ़ाने के लिए 1.नागरिक कर्तव्य, 2. स्वदेशी, 3. पर्यावरण संरक्षण, 4.समरसता, 5.कुटुंब प्रबोधन जैसे पांच संकल्प ही पंच परिवर्तन के सूत्र हैं। इन विषयों में भारत की आत्मा को झकझोरकर जगाने और 'नया भारत' बनाने का संकल्प झलकता है। किसी भी राष्ट्र और लोकतंत्र की सफलता उसके नागरिकों की सहभागिता और कर्तव्यबोध से ही सार्थक होती है। एक जीवंत लोकतंत्र की गारंटी उसकी नागरिक चेतना ही है। कानूनों की अधिकता और उसे न मानने का मानस दोनों साथ-साथ चलते हैं। अपनी माटी के प्रति प्रेम, उत्कट राष्ट्रभक्ति ही सफल राष्ट्र का आधार है। जापान जैसे देशों का उदाहरण देते समय हमें देखना होगा कि क्या हमारी राष्ट्रीय चेतना और संवेदना वही है जो एक जापानी में है। आखिर क्या कारण है कि अपनी महान परंपराओं, ज्ञान परंपरा के बाद भी हम एक लापरवाह और कुछ मामलों में अराजक समाज में बदलते जा हैं। कानूनों को तोड़ना यहां फैशन है। यहां तक की हम सार्वजनिक स्थानों पर गंदगी फैलाने और सड़कों पर रेड लाइट का उल्लंघन करने से भी बाज नहीं आते। ये बहुत छोटी बातें लगती हैं, किंतु हैं बहुत बड़ी। चुनावों में शत प्रतिशत मतदान तो दूर का सपना है। बहुत शिक्षित शहरों में वोटिंग 50 प्रतिशत से आगे नहीं बढ़ पाती। ये सूचनाएं बताती हैं कि हमें अभी जागरूक नागरिक या सजग भारतीय होना शेष है।कानूनों का पालन, कर का समय पर भुगतान, सामाजिक और सामुदायिक सेवा, पर्यावरण संरक्षण, राष्ट्रीय संपत्ति की सुरक्षा जरूरी है। एक शानदार समाज की पहचान है कि वह अपने परिवेश को न सिर्फ स्वच्छ और सुंदर बनाने का प्रयास करता है बल्कि अपने प्रयासों से अन्यों को भी प्रेरित करता है।

देखा जाता है कि हममें अधिकार बोध बहुत है किंतु कर्तव्यबोध कई बार कम होता है। जबकि संविधान हमें मौलिक अधिकारों के साथ कर्तव्यों की भी सीख देता है। हमारे धार्मिक ग्रंथ हमें नागरिकता और सामाजिक आचरण का पाठ पढ़ाते हैं। सवाल यह है कि हम उन्हें अपने जीवन में कितना उतार पाते हैं। पंचपरिवर्तन का दूसरा सूत्र है 'स्वदेशी'। स्वदेशी सिर्फ आत्मनिर्भरता का मामला नहीं है यह राष्ट्रीय स्वाभिमान का भी विषय है। अपनी जमीन पर खड़े रहकर विकास की यात्रा ही स्वदेशी का मूलमंत्र है। विनोबा जी कहते थे- स्वदेशी का अर्थ है आत्मनिर्भरता और अहिंसा। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ इसे सादगी से भी जोड़ता है। जिसके मायने हैं मितव्ययिता से जियो, कंजूसी से नहीं। स्वदेशी का सोच बहुत व्यापक है। परिवारों में भाषा, वेशभूषा, भवन, भ्रमण, भजन और भोजन ये छः चीजें हमारी ही होनी चाहिए। हम विदेशी भाषा, बोलें, दुनिया के साथ संवाद करें। किंतु अपने परिवारों अपनी मातृभाषा का उपयोग करें। विदेशी वस्त्रों से परहेज नहीं किंतु पारिवारिक मंगल आयोजनों और उत्सवों में अपनी वेशभूषा धारण करें। स्वभूषा, उपासना पद्धति, भोजन हमारा होना चाहिए। इसी तरह हम पूरी दुनिया घूमकर आएं किंतु भारत के तपोस्थलों, तीर्थस्थलों, वीरभूमियों तक भी हमारा प्रवास हो। हमारे परिजन जानें की राणा प्रताप कौन हैं और चित्तौड़गढ़ कहां है। शिवाजी कौन थे और रायगढ़ कैसा है। जालियांवालाबाग कहां है। इसी तरह हमारे घर भारतीयता का प्रतिनिधित्व करते हुए दिखने चाहिए। वहां एक भारतीय परिवार रहता है ,यह प्रकट होना चाहिए। महापुरुषों की तस्वीरें। अपनी भाषा में नाम पट्ट और स्वागतम् जैसे उच्चार लिखे हों। परिवारों में हमारी संस्कृति की छाप साफ दिखनी चाहिए। तुलसी का पौधा और पूजाघर के साथ, किताबों का एक कोना भी हो जिसमें हमारे धार्मिक ग्रंथ गीता, रामायण, महाभारत आदि अवश्य हों। उनका समय-समय पर पाठ भी परिवार के साथ हो। हमारी जीवनशैली आधुनिक हो किंतु पश्चिमी शैली का अंधानुकरण न हो। परिवार में काम करने वाले सेवकों के प्रति सम्मान की दृष्टि भी जरूरी है। ऐसे अनेक विषय हैं जिन पर विचार होना चाहिए। प्रकृति के साथ संवाद और सहजीवन भारत का मूल विचार है। अपनी नदियों, पहाड़ों और पेड़-पौधों में ईश्वर का वास देखने की हमारी संस्कृति और परंपरा रही है। प्रकृति के बिना मानव जीवन की कल्पना असंभव है। प्रदूषण आज बहुत बड़ी चिंता बन गया है। कुछ भी स्वच्छ नहीं रहा। हवा भी जहरीली है। इसलिए हमें अपने भारतीय विचारों पर वापसी करनी ही होगी। प्रकृति और पर्यावरण के साथ सार्थक संवाद ही हमें बचा पाएगा। ग्लोबल वार्मिंग जैसी चिंताएं हमारे सामने चुनौती की तरह हैं। पानी, बिजली को बचाना, प्लास्टिक मुक्त समाज बनाने के साथ वाहनों का संयमित उपयोग जरूरी है। एयरकंडीशनर का न्यूनतम उपयोग, वनों और जंगलों की रक्षा जैसे अनेक प्रयासों से हम सुंदर दुनिया बना सकते हैं। घरों में पेड़-पौधे लगाएं और हरित घर का संकल्प लें। सच तो यह है कि अगर हम पर्यावरण की रक्षा करेंगें तो वह हमारी रक्षा करेगा। सामाजिक समरसता के बिना कोई भी राष्ट्र अग्रणी नहीं बन सकता। गुरु घासीदास कहते हैं- मनखे-मनखे एक हैं। किंतु जातिवाद ने इस भेद को गहरा किया है। तमाम प्रयासों के बाद भी आज भी हम इस रोग से मुक्त नहीं हो सके हैं। भेदभाव ने हमारे समाज को विभाजित कर रखा है, जिसके चलते दुनिया में हमारी छवि ऐसी बनाई जाती है कि हम अपने ही लोगों से मानवीय व्यवहार नहीं करते हैं। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी कहते थे- अस्पृश्यता ईश्वर और मानवता के प्रति अपराध है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक रहे पू. बालासाहब देवरस ने इस संकट को रेखांकित करते हुए बसंत व्याख्यानमाला में कहा था कि- अगर छूआछूत गलत नहीं है दुनिया में कुछ भी गलत नहीं है, इसे मूल से नष्ट कर देना चाहिए। ऐसे में हमें यह समझना होगा कि जो कुछ भी सैकड़ों सालों से परंपरा के नाम पर चल रहा है वह हमारा धर्म नहीं है। इतिहास में हुए इन पृष्ठों का कोई भी सभ्य समाज समर्थन नहीं कर सकता। जबकि हमारे धर्म ग्रंथ और शास्त्र इससे अलग हैं। हमारे ऋषि और ग्रंथों के रचयिता सभी वर्गों से हैं। भगवान बाल्मीकि और वेद व्यास इसी परंपरा से आते हैं। यानि यह भेद शास्त्र आधारित नहीं है। यह विकृति है। इससे मुक्ति जरूरी है।हमें इसके सचेतन प्रयास करते हुए अपने आचरण, व्यवहार और वाणी से समरसता का अग्रदूत बनना होगा। सभी समाजों और वर्गों से संवाद और सहकार बनाकर हम एक आदर्श समाज की रचना में सहयोगी हो सकते हैं। इससे समाज का सशक्तिकरण भी होगा। समानता का व्यवहार, वाणी संयम, परस्पर सहयोग, संवेदनशीलता से हम दूरियों को घटा सकते हैं और भ्रम के जाले साफ कर सकते हैं। साथ ही अपने गांव, नगर के मंदिर, जलस्रोत, श्मशान सबके लिए समान रूप से खुल होने ही चाहिए। इसमें कोई भी भेद नहीं होना चाहिए। आज का सबसे बड़ा संकट कुटुंब का बिखराव है। एकल परिवारों में बंटते जाना और अकेले होते जाना इस समय की त्रासदी है। जबकि कल्याणकारी कुटुंब वह है।

वह सोच जो आज भी सभ्य समाज पर सवाल खड़े करती है

स्वाति

समाज का सकारात्मक साथ और सहयोग व्यक्ति को आत्मिक, भावनात्मक और मानसिक दृष्टिकोण से सबल तथा शीर्षस्थ करता है, लेकिन इसी समाज का साथ अगर न मिले या नकारात्मक हो तो व्यक्ति प्राण तक से गंवा बैठता है। उद्दंडता, उच्छृंखलता को रोकने के लिए कई नियमों में समाज ने स्वयं को बांधा। मगर जब ये नियम, सोच या विचार स्वार्थ लिए हों या वर्चस्व या प्रभुत्व स्थापित करने के लिए हों, तो फिर यह त्रासदी ही साबित होती है। ऐसी ही एक त्रासदी है भारत में 'डायन' या 'डाकन' की धारणा! सही तरीके से समझा जाए तो यह बस एक कुत्सित, कुंद और विक्षिप्त सोच है, पर यह सोच हर साल कई महिलाओं की जान ले लेती है। बिहार, झारखंड, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, असम और राजस्थान से लेकर भारत के कई कोनों में 'डायन' और 'जादू-टोना' के नाम पर सामूहिक और संगठित हत्याओं को अंजाम दिया जा रहा है। झारखंड के किसी कोने से कभी 'डायन' के नाम पर औरतों को निर्वस्त्र करके घुमाने की घटना सामने आती है, तो कभी असम के किसी कोने से मैला खिलाने की! वर्ष 2015 में रांची से एक ऐसी घटना सामने आई थी, जिसने सबका दिल दहला दिया था। एक औरत को 'डायन' बताकर 'शुद्धीकरण' के नाम पर भयावह यातनाएं दी गई थीं। इंसानियत की हत्या करते हुए 'डायन' घोषित करके सामूहिक बलात्कार और यौन हिंसा तक की घटनाएं सामने आ चुकी हैं। इस तरह की बर्बर सोच की इंतिहा तब होती है जब 'डायन', 'डाकन', 'चुड़ैल' के नाम पर सार्वजनिक रूप से पीट-पीट कर उनकी हत्या कर दी जाती है। इसी तरह की एक घटना हाल ही में बिहार के पूर्णिया जिले में हुई, जिसने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया। गांव के किसी परिवार का एक बच्चा बीमार हुआ और लोग उसे ओझा के पास लेकर गए। बच्चे को बचाया नहीं जा सका। कुछ ही दिनों बाद उसी परिवार के एक और बच्चे की तबियत खराब हुई। टोले के लोग फिर उसी ओझा के पास गए, जिसने एक अन्य परिवार की महिला को 'डायन' घोषित कर दिया। इसके बाद दो-ढाई सौ लोगों ने उस घर की महिलाओं और पुरुषों को पीट-पीट कर अधमरा कर दिया और फिर उन्हें जला दिया। परिवार का एक बच्चा किसी तरह जान बचाकर भागा और पुलिस को वारदात की जानकारी दी। कुछ लोगों को नामजद और लगभग डेढ़ सौ अज्ञात लोगों के नाम प्राथमिकी तो दर्ज हो गई, लेकिन क्या

गुनहगारों को सजा मिल पाएगी? कभी जमीन-जायदाद, संपत्ति हड़पने के नाम पर, कभी किसी विवाद में, कभी बच्चों के बीमार होने पर, कभी गांव की फसल खराब होने पर तो कभी बिना किसी बात के भी गांव के तथाकथित ओझा-गुनी, तांत्रिक आदि गांव की किसी भी स्त्री को 'डायन' घोषित कर विपदा का कारण बता देता है। कम शिक्षित या अनपढ़ या फिर बहुत सारे कथित पढ़े-लिखे लोग भी उसे ही सच मानकर उस स्त्री की अस्मिता और प्राण हरण पर तुल जाते हैं। शिक्षा का अभाव, कठोर कानून की कमी, अंधविश्वास, स्वार्थ, प्रभुत्व जमाने की मंशा, मानवता का क्षरण, गांव वालों का एक जैसा सोचना-समझना जैसे कारण उभर कर सामने आए हैं, जिसके आधार पर उन सबको एक साथ एक विवेकहीन भीड़ में तब्दील कर दिया जाता है। इस तरह की जड़ता और इसकी हिंसा के विरुद्ध बिहार, झारखंड और असम आदि कुछ राज्यों में कानून हैं, मगर ऐसे मामलों में जुर्म साबित करना सबसे कठिन काम होता है। 'डायन' घोषित चाहे कोई तांत्रिक या व्यक्ति विशेष करता हो, मगर उकसाने से लेकर अमानवीय व्यवहार या हत्या जैसे काम गांव या टोले के लोगों का होता है, जो किसी आपराधिक गिरोह की तरह घटना को अंजाम देते हैं। ऐसे में गवाह और सबूत निकालना प्रशासन के लिए भी टेढ़ी खीर साबित होता है। कुछ लोग गिरफ्तार हो भी जाते हैं तो अक्सर असली अपराधी बच निकलता है। जब कानून का खौफ ही नहीं होगा तो लोग बेफिक्र होकर ऐसे अपराधों को अंजाम देंगे। भारत आज चांद और मंगल तक पर पहुंच गया है। मगर विकास के सफर में रोशनी के बीच अंधेरे की तरह समाज में मानवीयता और संवेदनशीलता को चुनौती देने वाली कुछ मिथ्या धारणाएं या जड़ विकृत सोच अभी तक हमारे समाज पर कुंडली मार कर बैठी हुई हैं। आखिर किन वजहों से ऐसा होता है कि देश के दूरदराज इलाकों में स्मार्टफोन या मोबाइल टावर जैसी तकनीकी सुविधाएं तो पहुंचा दी जाती हैं, लेकिन लोगों की जड़ता पर चोट करने वाली सोच को खत्म करने, अंधविश्वासों को दूर करने के लिए कोई सामाजिक विकास नीति नहीं दिखती।

भारत और चीन को एक-दूजे की जरूरत

भारतीय विदेश मंत्री एस जयशंकर की सिंगापुर व चीन की यात्रा बदलती विश्व व्यवस्था के अनुकूल मानी जाएगी। सिंगापुर में बेशक 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी' को आगे बढ़ाने पर जोर दिया गया, मगर गलवान में पांच साल पहले हुई हिंसक झड़प के बाद पहली बार किसी भारतीय विदेश मंत्री के चीन जाने पर चर्चा स्वाभाविक ही है। जयशंकर शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के विदेश मंत्रियों की बैठक में शिरकत करने तियानजिन पहुंचे थे। अपने चीनी समकक्ष वांग यी के साथ मुलाकात में दोनों नेताओं ने भारत-चीन द्विपक्षीय संबंधों की समीक्षा की। वास्तव में, यह भारत-चीन संबंधों का भी 'प्लैटिनम जुबली' दौर है। दोनों देशों की 75 वर्षों की इस द्विपक्षीय कूटनीतिक यात्रा में कई पड़ाव आए हैं। लिहाजा, उचित ही दोनों नेताओं ने संबंधों की स्थिरता पर जोर दिया। कैलास मानसरोवर यात्रा को फिर से शुरू करने में चीन के सहयोग की सराहना भी की गई। यही नहीं, दोनों ने एक-दूसरे देश में लोगों की आवाजाही बढ़ाने और सीधी उड़ान सेवा की दिशा में अतिरिक्त कदम उठाने पर भी सहमति जताई। पिछले साल अक्तूबर में ब्रिक्स सम्मेलन के इतर भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग की मुलाकात हुई थी। उसके बाद से ही यह संकेत मिलने लगे थे कि भारत और चीन के रिश्ते पटरी पर लौटने लगे हैं। चूंकि अगले महीने फिर से ये दोनों शासनाध्यक्ष एससीओ बैठक में मिलने वाले हैं, इसलिए भारतीय नेताओं की हाल-फिलहाल में चीन-यात्रा बढ़ी है। उल्लेखनीय है, पिछले दिनों एससीओ के रक्षा मंत्रियों की बैठक भी हुई थी, जिसके घोषणापत्र में पहलगाम हमले का जिक्र न होने और बलूचिस्तान का वर्णन करके पाकिस्तानी हितों की वकालत करने के कारण भारतीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने उस पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया था। ऐसे में, यह जरूरी था कि भारत आतंकवाद के मसले पर मजबूती से अपनी बात रखे, जो एस जयशंकर ने बखूबी किया। यह विडंबना है कि एससीओ जब बना था, तब आतंकवाद से मिलकर मुकाबला करना इसके प्राथमिक उद्देश्यों में एक था, लेकिन अब इसी मसले पर इसके सदस्य देशों में मतभेद दिखने लगे हैं। पाकिस्तान आतंकवाद का खुलेआम पोषण करता है, जिसका परोक्ष रूप से चीन साथ दे रहा है। भारत इसी दुरभिसंधि के खिलाफ मुखर है। हालांकि, भारत-चीन रिश्तों में आती गरमाहट को नाटो के हालिया फैसले के बरअक्स भी देखना चाहिए। दरअसल, नाटो के देशों ने अब निर्णय लिया है कि वे अपने हथियार यूक्रेन को देंगे और बाद में अमेरिका से खरीदकर भी उसे मुहैया कराएंगे। हालांकि, बाद में इस खबर पर स्पष्टीकरण भी जारी किया गया, लेकिन माना यही जा रहा है कि नाटो देश अब यूक्रेन का खुलकर साथ देंगे, वे रूस का मुकाबला करना चाहते हैं। इससे वैश्विक आपूर्ति-शृंखला पर खासा असर पड़ सकता है, जो भारत और चीन, दोनों को प्रभावित करेगा। वैसे, एस जयशंकर की इस यात्रा से चीन के हित भी सधे। वास्तव में, पिछले कुछ दिनों से उसके नेता शी जिनपिंग सार्वजनिक तौर पर नहीं दिख रहे थे। इसके कारण पश्चिमी मीडिया चीन में संभावित सत्ता-परिवर्तन का दावा करने लगा था। मगर अब जिनपिंग और जयशंकर की मुलाकात की तस्वीरें सार्वजनिक होने के बाद कहा जा रहा है कि चीन ने भारत के माध्यम से विश्व को संदेश दे दिया है। एक तर्क यह भी दिया जा रहा है कि जब चीन आतंकवाद के मसले पर पाकिस्तान के साथ है, तो उसके साथ संबंध क्यों रखे जाएं? ऐसा कहने वाले लोग वास्तव में दोनों देशों के रिश्तों की जटिलताओं को नहीं समझते। चीन ने पाकिस्तान का साथ दिया।

आज का राशिफल

मेष : [illegible] शुभांक-4-6-7

वृषभ : [illegible] शुभांक-3-5-7

मिथुन : [illegible] शुभांक-2-4-6

कर्क : [illegible] शुभांक-1-3-5

सिंह : [illegible] शुभांक-4-6-8

कन्या : [illegible] शुभांक-1-7-8

तुला : [illegible] शुभांक-5-7-9

वृश्चिक : [illegible] शुभांक-3-5-7

धनु : [illegible] शुभांक-1-4-6

मकर : [illegible] शुभांक-3-5-7

कुंभ : [illegible] शुभांक-1-4-6

मीन : [illegible] शुभांक-2-4-6

सुडोकू पहेली क्रमांक- 5662

			4	5		8		
		6	3		9			2
4	2							7
9		2					8	
		3	2	1	8	7		
	5					1		4
7							9	5
2			5		7	3		
		1		2	3			

नियम : प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक अंक भरे जाने आवश्यक हैं, इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी व खड़ी पंक्ति में एवं 3x3 के वर्ग में अंक की पुनरावृत्ति न हो, पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।

सुडोकू पहेली क्र. 5661

5	4	2	6	8	1	9	7	3
9	6	7	3	4	5	2	8	1
8	1	3	9	2	7	6	5	4
2	9	1	7	3	8	5	4	6
6	3	5	2	1	4	7	9	8
7	8	4	5	9	6	3	1	2
3	2	8	4	5	9	1	6	7
4	5	6	1	7	3	8	2	9
1	7	9	8	6	2	4	3	5

वर्ग पहेली 5662

संकेत: बाएं से दाएं
1. 1947 को इस राज्य को भारत में शामिल किया गया (3)
4. हरियाणा के प्रमुख राजनीतिज्ञ जो भारत के उपप्रधानमंत्री रहे (4)
7. [illegible] (3)
8. यदि ऐसा न होगा तो (3)
9. निचोड़, [illegible] (2)
11. एक बार सांस लेने का समय (2)
13. मथुरा से करीब 20 किमी दूर स्थित वृंदावन का एक गांव जहां नंद रहते थे (4)
15. उत्तरप्रदेश के इस शहर का नाम परिवर्तित कर प्रयागराज कर दिया गया है (5)
17. [illegible] (2)
18. जीव-जंतुओं के शरीर के त्वचा में से निकले सूक्ष्म तंतु (2)
19. [illegible] (2)
20. हिलने-डुलने की क्रिया, गति (4)
23. पति-पत्नी का कानूनी रूप से संबंध विच्छेद (2)
24. [illegible] (4)

ऊपर से नीचे
1. तीनों काल (भूत, वर्तमान, भविष्य)(3)
2. इसे अंग्रेजी में बिल कहते हैं (2)
3. पूर्णिमा की रात यह भी कहलाती है (2)
4. फिल्म इंडस्ट्री में मशहूर अभिनेता जिनका निधन 3 दिसंबर 11 को हुआ था (5)
5. बहादुर, योद्धा, शूर (2)
6. [illegible] (2)
10. क्रोधपूर्ण दृष्टि, क्रोध सूचक भ्रूभंग (3)
11. मध्यस्थ, [illegible] (3)
12. बहुत बड़ा, महान, सर्वश्रेष्ठ (2)
14. [illegible] (3)
15. उपासना, आराधना, पूजा (उर्दू)(4)
16. यह भारत में मुगल साम्राज्य का संस्थापक था (3)
19. नया, नवीन, नव (3)
20. अधिकार, इख्तियार (2)
21. [illegible] (2)
22. वीर, बहादुर, योद्धा (2)

वर्ग पहेली 5661 का हल

क	ल	र		का	न	पु	र
ल	ह	क	ना		म	ज	
आ		मी	ना	क्षु	मा	री	
ज	ल		ना	ल			रा
औ	ला	द		प	हा	ड़	ज
र	ट	ना		ति	ल	क	
क		ह	रा			ज	ब
ल	ख	न		स	म	त	ल

मप्र विद्युत कंपनी कर्मचारी संघ फेडरेशन के नवनियुक्त पदाधिकारियों को नियुक्ति पत्र प्रदान किए

मंदसौर, 19 जुलाई गुरु एक्सप्रेस। म.प्र.वि. कंपनी कर्मचारी संघ फेडरेशन मंदसौर वृत्त के सभी पदाधिकारियों/कार्यकारिणी सदस्यों की एक महत्वपूर्ण बैठक आज स्थानीय श्रम शिविर में संपन्न हुई। बैठक के शुरुआत में विद्युत फेडरेशन के संस्थापक महामंत्री, पूर्व विधायक स्व. डी पी पाठक के चित्र पर माल्यार्पण किया गया। बैठक को संबोधित करते हुए प्रांतीय महामंत्री डी.एस. चंद्रावत ने कहा कि वर्तमान परिदृश्य में विद्युत विभाग में संगठन कि जागरूकता और सक्रियता बहुत आवश्यक है। आने वाले समय में म. प्र. शासन ऊर्जा विभाग द्वारा नियमित पदों पर भर्ती किया जाना है इसमें संविदा कर्मचारी और आउटसोर्स कर्मचारियों को नियुक्त करवाने हेतु नीति निर्धारण करवाने हेतु कंपनी कर्मचारी संघ फेडरेशन लगातार प्रयास कर रहा है सभी सदस्यों से आह्वान किया गया है कि संगठन को मजबूत बनाने में तन, मन, धन से सहयोग करें।

कार्यक्रम को रीजनल सेक्रेट्री अरुण राठौर, मल्हारगढ डिविजन के अध्यक्ष जावेद हुसैन बाबर, आनंद राव जाधव, सुरेश श्रीवास्तव, डी.के. पाठक, मंदसौर के संवरक्षक राजेंद्र चाष्टा, जगदीश सीतामऊ के अध्यक्ष राजवीर सिंह शक्तावत ने भी संबोधित किया। सभी डिवीजन / वृत शाखा का पुनर्गठन करते हुए नवनियुक्त पदाधिकारियों को नियुक्ति पत्र सौंपे गए। गरोठ डिविजन शाखा के संवरक्षक आर एस सेठिया, एन के गुप्ता, अध्यक्ष पद पर महेंद्र सोनी, कार्यकारी अध्यक्ष जी आर मंसूरी, वरिष्ठउपाध्यक्ष दिनेश सूर्यवंशी, उपाध्यक्ष प्रवीण भावसार, रमेश मालवीय, कोषाध्यक्ष सुरेश शर्मा सचिव सुभाष छालीवाल, सीतामऊडिविजन शाखा के संवरक्षक के एस देवड़ा, के एस भट्ट, गणपत लाल शक्तावत, कार्यवाहक अध्यक्ष मुन्ना खान मंसूरी, वरिष्ठ उपाध्यक्ष कारूलाल बामनिया, उपाध्यक्ष विजय कुमार पांडे, नंदकिशोर शर्मा, कोषाध्यक्ष राजेश नारायण शर्मा, सचिव श्यामलाल चौधरी मंदसौर डिविजन शाखा के संवरक्षक एस एल पाटीदार, राजेंद्र चाष्ट, जगदीश पाटीदार, अध्यक्ष पद पर नरेंद्र राव नवले, कार्यवाहक अध्यक्ष अमित कोचट , वरिष्ठ उपाध्यक्ष हरिवल्लभ डपकरा, उपाध्यक्ष महेश पाटीदार, प्रमोद शर्मा, प्रकाश मिमरोट, कारू लाल जाटव, कोषाध्यक्ष आर सी भट्ट, सचिव यश जमरा, कार्यालय सचिव अंकित मोड, संगठन सचिव नरेंद्र आर्य, प्रचार सचिव वीरेंद्र हाडा सहसचिव विजेंद्र सिंह चौहान, मंदसौर वृत शाखा के अध्यक्ष पद पर दिलीप शर्मा, कार्यवाहक अध्यक्ष शंकर खरे, वरिष्ठउपाध्यक्ष मनोज पटेल, उपाध्यक्ष देवेंद्र सिंह चौहान, अभिषेक शर्मा, तेजमल साधु, मनोज बबाना, सचिव दीपेंद्र सिंह चौहान प्रचार सचिव प्रकाश लोहार, महिला प्रतिनिधि नेहा सोमपुरा, पुष्पा धनोतिया, अलका पंवार कार्यकारिणी सदस्य ओमप्रकाश तनान, नारायण शर्मा, सुनील सोलंकी, राहुल चाष्ट, अरविंद शर्मा, सुरेंद्र सिंह चंद्रावत, सुरेंद्र सिंह डोडिया, प्रकाश गिर, रमेश सुथार, कमलेश दायमा, शाहिद खान, संदीप पाटीदार, विमल दामोदर, कोमल धाकड, हेमंत मराठे, प्रवीण विजय, प्रदीप जोशी, मुकेश मीणा, ओमप्रकाश खिंचावत, मनीष गौर, मुकेश जाटव, भूपेंद्र गोस्वामी, सुरेश मालवीय शोभित श्रीवास्तव, एजाज एहमद, जगदीश राठौड, विकास डीडवानिया, बंटी कुमावत, द्वारका प्रसाद को बनाया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन रीजनल सेक्रेट्री अरुण राठौर ने किया और आभार अध्यक्ष दिलीप शर्मा ने व्यक्त किया।

शिक्षक कभी सेवानिवृत नहीं होते-प्रेमसिंह

कुचड़ोद में पूर्व प्राचार्य और प्रधानाचार्य का विदाई समारोह संपन्न

कुचड़ोद, 19 जुलाई गुरु एक्सप्रेस। शिक्षक समाज सुधारक के रूप में दर्पण होते है, शिक्षक कभी भी सेवा से छुटकारा नहीं पा सकते , वे कहा भी रहे समाज को उन्नति की और ले जाने का प्रयास करते है, उक्त विचार जनपद सदस्य प्रेमसिंह पंवार ने पूर्व प्राचार्य के एल रैदास और पूर्व प्रधानाचार्य एम एल गौड के सेवानिवृत्ति पर आयोजित समारोह में व्यक्त किये, श्री पंवार ने कहा कि श्री गौड ने स्काउट गाइड के क्षेत्र में गांव के छात्रों को प्रदेश स्तरीय सम्मान दिलवाने में योगदान रहा, वही कई प्रतिभाओं को शिखर तक पहुंचाने में दोनों गुरुओं का महत्वपूर्ण योगदान हैं। इन्होंने विद्यालय उत्थान के लिए कई कार्य किए जो गिनाए नहीं जा सकते , वही एन एल सूर्यवंशी बाबूलाल सोनी ने भी विचार रखे , इस दौरान दोनों शिक्षाविदों का शालश्रीफल से सम्मान गांव के गणमान्य नागरिकों में आजाद जैन, विष्णु दीक्षित , सहित कई लोगों ने किया ,संचालन दिलीप सोनी के द्वारा किया ,आभार सेवानिवृत एम एल बडगोत ने माना।

पैक्स नाहरगढ़ द्वारा संचालित इफकों आउटलेट का अपेक्स बैंक के अधिकारियों द्वारा अध्ययन भ्रमण

मंदसौर, 19 जुलाई गुरु एक्सप्रेस। जिला सहकारी बैंक मंदसौर से सम्बद्ध सहकारी संस्था पैक्स नाहरगढ द्वारा बहुउद्देशिय व्यवसाय विविधकरण अन्तर्गत दिनाक 23 मई 2025 को संस्था में इफकों (एम.सी.) आउटलेट का शुंभारभ किया गया था। संस्था द्वारा उक्त आउटलेट के माध्यम से संस्था द्वारा कृषि से संबंधित उत्पाद जैसे बीज उपचार, खरपतवार नाशक, एवं पौध की ग्रोथ के लिये न्यूट्रीशियन आदि का विक्रय किया जा रहा है। विगत 02 माह में संस्था नाहरगढ द्वारा 18 लाख के कृषि उत्पादों का विक्रय किया जा चुका है। संस्था के उक्त व्यवसाय विविधीकरण के सम्पूर्ण कार्यो का अध्ययन एवं समीक्षा हेतु प्रदेश स्तर से श्री आर.के. गंगले विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी म.प्र. राज्य सहकारी बैंक भोपाल, श्री परमानंद गोडरिया उपायुक्त सहकारिता जिला मंदसौर के द्वारा पेक्स नाहरगढ का भृमण किया गया एवं संस्था द्वारा किये जा रहे कार्यो की समीक्षा की गई। साथ ही कृषकों को संस्था नाहरगढ के द्वारा इफको आउटलेट के माध्यम से उपलब्ध करवाई जा रही सेवाओं के संबंध में कार्यक्षैत्र के कृषकों से भी अधिकारियों द्वारा चर्चा की गई। कृषकों द्वारा संस्था के इस कार्य को सराहा गया।

यहा यह भी स्मरणीय है कि संस्था नाहरगढ पुर्णत: कम्प्यूटरीकृत संस्था हो कर ई-पेक्स साफटवेयर पर कार्य कर रही है। संस्था नाहरगढ द्वारा अपने कृषकों को माईक्रो एटीएम के माध्यम से संस्था स्तर पर उनकी जिला सहकारी बैंक में जमा अमानत राशि का रूपये 5 हजार तक का भुगतान किया जा रहा है। संस्था नाहरगढ उक्त सुविधा प्रदान करने वाली प्रदेश स्तर की प्रथम संस्था है। शीर्ष बैंक के द्वारा किये जा रहे अध्ययन भृमण के समय जिला सहकारी बैंक के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री सुनिल कच्छारा, इफकों प्रतिनिधि श्री आदित्य पाटीदार, साख्यिकीय अधिकारी श्री मुकेश पालीवाल, श्याम बागोरा, प्रशान्त जैन, श्री गोपाल राठौर शाखा प्रबंधक एवं शाखा नाहरगढ एवं नाहरगढ से सम्बद्ध सहकारी संस्थाओं के अधिकारी एवं कर्मचारी सम्मिलित थे। शीर्ष बैंक के अधिकारी श्री गंगले एवं उपायुक्त सहकारिता श्री गोडरिया द्वारा संस्था नाहरगढ द्वारा किये जा रहे उक्त कार्य एवं अपने कृषकों के उपलब्ध करवाई जा रही सेवाओं की सराहना की गई साथ ही यह भी निर्देश दिये गये जिले की सभी शाखाओं में 1-1 इफकों आउटलेट खोला जावें।

बिना होमवर्क के सीएमओ होने से किरकिरी हो रही है नपा की

नपा में परमानेंट सीएमओ देने की बंसल ने उठाई मांग

मंदसौर, 19 जुलाई गुरु एक्सप्रेस। समाज सेवी व पार्षद सुनील बंसल ने एक प्रेस वक्तव्य में कहा है कि कहने को तो हमारे मंदसौर की नगर पालिका प्रदेश की सबसे बडी नगर पालिका है लेकिन इस सबसे बडी नगर पालिका को उसके अनुरूप कोई महत्व नहीं दिया जाता। होना यह चाहिए कि इतनी बडी नगर पालिका में यदि सीएमओ का स्थानांतरण किया जाना है तो तत्काल यहां फुल फ्लैश सीएमओ भेजना चाहिए लेकिन ऐसा ना करते हुए एक डिप्टी कलेक्टर महिला अधिकारी को यहां प्रभारी सीएमओ बनाया गया है। इतनी बडी नगर पालिका प्रभारी के भरोसे कैसे चलेगी ?

श्री बंसल ने कहा कि सभी जानते हैं कि पूर्ण पदस्थ सीएमओ के रहते हुए भी नगर पालिका में इतने उत्आपे होते हैं। ना पार्षद संतुष्ट, न जनता संतुष्टफिर प्रभारी सीएमओ के भरोसे यह नगर पालिका कैसे चलेगी ? जो अधिकारी प्रभारी होता है वह केवल काम चलाऊकाम ही करता है या समय पास जैसी स्थिति रहती है। और यदि कोई बडा एक्शन लेना भी हो तो बिना होमवर्क के ही वह एक्शन हो जाता है और नगर पालिका की किरकिरी होती है जैसा कि हाल ही में एक निजी अस्पताल के एमएसओ में बने निर्माण को तोड़ने के दौरान हुआ। श्री बंसल ने शासन से मांग की है कि मंदसौर नगर पालिका में परमानेंट सीएमओ को जल्द से जल्द भेजा जाए।

गो-भैंसवंशीय पशुओं में नि:शुल्क खुरपका-मुँहपका टीकाकरण 31 तक होगा

मंदसौर, 19 जुलाई गुरु एक्सप्रेस। पशु पालन एवं डेयरी विभाग के उप सचांलक द्वारा बताया गया कि भारत सरकार की महत्वपूर्ण राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम (NADCP-FMD) योजना के अंतर्गत जिले के समस्त गो-भैंसवंशीय पशुओं में खुरपका-मुँहपका टीकाकरण कार्यक्रम 31 जुलाई 2025 तक किया जाएगा। इस कार्यक्रम के तहत 4 माह से अधिक आयु के समस्त गो-भैंसवंशीय पशुओं में नि:शुल्क खुरपका-मुँहपका टीकाकरण किया जाएगा। खुरपका-मुँहपका बीमारी होने पर पशुओं के मुंह में छाले एवं पेरों में घाव हो जाते हैं। दुधारू पशुओं में दूध देने की क्षमता कम हो जाती है। जिससे पशु पलकों को आर्थिक नुकसान होता है। बीमारी बढने पर पशु की मृत्यु भी हो सकती है। संक्रमांक बीमारी एक पशु में होने पर पूरे ग्राम के पशुओं को प्रभावित करती है। बीमारी से बचाव का एकमात्र उपाय पशुओं का टीकाकरण ही है। पशुपालक अपने ग्राम के निकटस्थ पशु चिकित्सा संस्थान से संपर्क कर अपने संपूर्ण ग्राम में टीकाकरण करवाएं।

चुण्डावत करेंगे जर्मनी में भारतीय टीम का प्रतिनिधित्व

नारायणगढ़, 19 जुलाई गुरु एक्सप्रेस। इन्वेंशन बास्केटबॉल अकादमी के कोच श्री किशनपाल सिंह एवं सत्येंद्रपाल सिंह ने जानकारी देते हुए बताया कि कीर्तिराज सिंह चुण्डावत जो विगत दस वर्षों से लगातार कोच सत्येंद्रपाल सिंह एवं किशनपाल सिंह के साथ रहकर प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं, उन्हें विश्व स्तरीय टूर्नामेंट में भारतीय टीम का प्रतिनिधित्व करने का मौका मिला है।

कीर्तिराज सिंह चुण्डावत ने अपने पैतृक ग्राम एवं मध्यप्रदेश शासन के उपमुख्यमंत्री श्री जगदीश जी देवड़ा की विधानसभा के निर्मल ग्राम हरसौल का नाम गौरवान्वित किया हैं। बहुत गर्व की बात है कि भारत की बास्केटबॉल टीम पहली बार वर्ल्ड यूनिवर्सिटी गेम्स में हिस्सा लेगी। वर्ल्ड यूनिवर्सिटी गेम्स को ओलंपिक के बाद सबसे बडे खेलों का दर्जा दिया जाता है। इससे पहले भी कीर्तिराज सिंह चुण्डावत जूनियर नेशनल में ब्रॉन्ज मेडल और जूनियर इंडिया टीम का कोलंबो में प्रतिनिधित्व करते हुए गोल्ड मेडल प्राप्त कर चुके है। कीर्तिराज सिंह चुंडावत नीमच, मंदसौर के एकमात्र अंतरराष्ट्रीय गोल्ड मेडलिस्ट खिलाडी है। इसके अतिरिक्त अभी हाल ही में 2025 में कीर्तिराज सिंह चुण्डावत को 'पंख खेल रत्न' अवार्ड से माननीय मुख्यमंत्री श्री मोहन जी यादव द्वारा भोपाल में सम्मानित किया गया। 18 जुलाई से 27 जुलाई 2025 तक कीर्तिराज सिंह चुण्डावत भारतीय टीम का प्रतिनिधित्व जर्मनी में करते हुए सभी देशों के सामने कडी चुनौती पेश करेंगे। कीर्तिराज सिंह चुण्डावत की स्वर्णिम सफलता पर चुण्डावत परिवार सहित ग्रामीणजन द्वारा बधाई प्रेषित कर उज्जवल भविष्य की कामना की।

जिले में अब तक औसत 449.5 मिमी वर्षा दर्ज

नीमच, 19 जुलाई गुरु एक्सप्रेस। जिले में चालू वर्षाकाल में अब तक औसत 449.5 मि.मी. वर्षा दर्ज की गई है। जबकि गत वर्ष इस अवधि में औसत 266.3 मि.मी. वर्षा दर्ज की गई थी। अधीक्षक भू अभिलेख नीमच से प्राप्त जानकारी के अनुसार जिले में एक जुन से इस वर्ष अब तक नीमच में 393.5मि.मी., जावद में 518 मि.मी., सिंगोली में 571.6मि.मी. एवं मनासा में 315 मि.मी.वर्षा दर्ज की गई हैं। जबकि गत वर्ष इस अवधि में नीमच में 258 मि.मी.जावद में 286 मि.मी.एवं मनासा में 255 मि.मी. वर्षा दर्ज की गई हैं। जिले में 19 जुलाई 2025 को प्रात: 8 बजे तक पिछले 24 घंटे में औसत 54.5 मि.मी. औसत वर्षा दर्ज की गई है। पिछले 24 घंटे में नीमच में 35 मि.मी., जावद में 69 मि.मी., मनासा में 55 मि.मी व सिंगोली में 59मि.मी. वर्षा दर्ज की गई है।

कलाव्योम फाउंडेशन का लोक गायन कार्यक्रम आज

पद्मश्री से सम्मानित कालूराम बामनिया देंगे प्रस्तुति

मंदसौर, 19 जुलाई गुरु एक्सप्रेस। कला, संस्कृति और लोक परंपराओं के संवर्धन के लिए समर्पित कलाव्योम फाउंडेशन द्वारा आज शाम 7 बजे से कालिका माता मंदिर, परिसर ग्राम सेदरा माता में लोक गायन कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। इस आयोजन में पद्मश्री सम्मानित अंतरराष्ट्रीय लोक गायक कालूराम बामनिया अपनी प्रेरणादायी प्रस्तुति देंगे। कबीर के दोहों, भजनों और लोक गायन की परंपरा को जीवंत करता यह कार्यक्रम स्थानीय जनमानस को सामाजिक समरसता, आध्यात्मिकता और लोक चेतना से जोड़ने का कार्य करेगा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वरिष्ठसमाजसेवी ओम सिंह भाटी होंगे, जो समाज में सांस्कृतिक चेतना और सेवा कार्यों के लिए व्यापक रूप से पहचाने जाते हैं। कलाव्योम फाउंडेशन के अध्यक्ष अशोक श्रीमाल ने बताया कि यह आयोजन ग्रामीण क्षेत्रों में सांस्कृतिक जागरूकता फैलाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है। कार्यक्रम में स्थानीय नागरिकों, युवाओं, ग्रामीण प्रतिभाओं और सामाजिक कार्यकर्ताओं की सहभागिता अपेक्षित है।

पौधे वितरीत कर बैंक ऑफ़ इंडिया में मनाया किसान दिवस

मंदसौर, 19 जुलाई गुरु एक्सप्रेस। 19 जुलाई किसान दिवस के तहत शनिवार को बैंक आफ इंडिया शाखा दलौदा में किसान महिलाओं व वरिष्ठ किसान को पुष्पहार पहनाकर व फलदार पौधे वितरित कर मनाया गया किसानों द्वारा शाखा परिसर में केक भी कटवाया गया।

बैंक मैनेजर तृप्ति वर्मा ने बैंक की योजनाओं के बारे में सभी किसानों को विस्तार से बताया और उनकी समस्या भी सुनी व बताया कि बैंक में किसान दिवस मनाने का उद्देश्य यही है कि किसानों को वित्तीय सहायता और विभिन्न योजनाएं प्रदान की जा सके और क्षेत्र के किसानों को सशक्त बनाया जा सके। किसान हरिप्रसाद पाटीदार ने बताया कि रिश्तो की जमा पूंजी बैंक ऑफ़ इंडिया है इस स्लोगन को साकार किया दलौदा ब्रांच ने हम आभारी है दलौदा बैंक आफ इंडिया के जिन्होंने क्षेत्र के किसानों को जागरूक किया और योजनाओं के बारे में भी बताया और पूर्व में सशक्त भी बनाया पहले हम किसाको की आर्थिक स्थिति बहुत बुरी हुआ करती थी, जब से बैंकों में केसीसी और शासकीय योजनाओं का लाभ मिलने लगा तब से क्षेत्र के किसानों कि स्थिति में बहुत सुधार हुआ। बैंक स्टाफ द्वारा फलदार पौधे किसानों को वितरित किए गए जिसमें नीम, आंवला, जायफल, सीताफल, अनार, आम, चीकू, गुलमोहर, बादाम नींबू संतरा आदि के पौधे वितरित किए गए वह किसानों से आह्वान किया गया कि अपने खेतों की मेड पर यह फलदार पौधे भी लगाए। बैंक के कार्यक्रम प्रभारी एवं संचालक मुकेश पाठक, बैंक स्टाफ श्रीमती सीमा सैनी, राकेश मीणा, गोपाल परमार, राधेश्याम, अंबालाल माली आदि बैंक स्टॉप उपस्थित रहे। दलौदा क्षेत्र सुदूर गांव से भी किसानों को यहां आमंत्रित किया गया जिसमें महिला किसान श्रीमती शांति बाई, तखत सिंह, देवराम पाटीदार, देवीचंद पाटीदार, दुर्गाशंकर पाटीदार, लीलाशंकर पाटीदार, राधेश्याम शर्मा, धर्मेंद्र, रामचंद्र, वासुदेव, चंद्रशेखर, गोपाल, राकेश, महेश, दिनेश है आदि करीब 100 किसान उपस्थित रहे।

शिव महापुराण कथा एवं रुद्राभिषेक का शंखनाद आज से

साध्वीं सत्या सिद्धा गिरी जी के मुखारविंद से प्रवाहित होगी कथा

नीमच, 19 जुलाई गुरु एक्सप्रेस। ओम शिव भक्त मंडल , अग्रवाल विकास समिति एवं अन्नपूर्णा सेवा न्यास नीमच के संयुक्त तत्वाधान में क्षेत्र की सुख समृद्धि एवं विश्व शांति की कामना के साथ परम पूज्य दीदी मां साध्वी ऋतुंभरा जी की शिष्या वात्सल्या धाम बाड़मेर की पुज्या साध्वी सुश्री सत्या सिद्धा गिरी जी महाराज साहब के मुखारविंद से सात दिवसीय शिव महापुराण कथा गोमाबाई रोड स्थित सीएसवी अग्रोहा भवन में 20 से 26 जुलाई तक प्रतिदिन दोपहर 2 से 5 बजे तक तथा सुबह 9 से 11 बजे तक रुद्राभिषेक का आयोजन विद्वान आचार्य पंडितों के मार्गदर्शन में आयोजित किया जाएगा। संरक्षक राकेश जैन पप्पू ने कहा कि अभिषेक नीमच वासियो के लिए सौगात है। सावन महीने में अभिषेक का महत्व रहता है। अभिषेक के माध्यम से मन को पवित्र करना का लक्ष्य है उनके माध्यम से युवाओं में धर्म संस्कार सीखाना आयोजन का उद्देश्य है। धर्म ग्रंथों से सभी को समस्याओं के लिए मार्गदर्शन मिलेगा। कथा का आयोजन और अभिषेक पूरी तरह नि:शुल्क है। पूजन सामग्री स्वयं की होती है तभी उसका पुण्य फल मिलता है। इस अवसर पर ओम शिव भक्त मंडल नीमच के अध्यक्ष शिवनारायण गर्ग, श्री राम गौड बोले, कोषाध्यक्ष प्रकाश मंडवारिया सचिव छाया वीरेंद्र जायसवाल, संयोजक प्रहलाद राय गर्ग दडोली वाला, अन्नपूर्णा सेवा न्यास नीमच , अग्रवाल विकास समिति के गोपाल गर्ग ने सभी धर्म प्रेमी श्रद्धालु भक्तों से आह्वान किया है कि समय पर उपस्थित होकर शिव पुराण की ज्ञान गंगा का धर्म लाभ पुण्य ग्रहण करें।

सिरखेड़ा में नि:शुल्क आयुर्वेद चिकित्सा शिविर संपन्न

नीमच, 19 जुलाई गुरु एक्सप्रेस। शासकीय आयुर्वेद औषधालय सावन द्वारा शनिवार को आंगनवाडी केंद्र सिरखेडा में , शिविर आयोजित किया गया। ।कुल 93 रोगियों का स्वास्थ्य परीक्षण कर औषधियां वितरित की गई।शिविर में आने वाले रोगियों को वर्षा ऋतु के अनुसार आहार विहार के बारे में जानकारी दी गई।

******* सफलता की कहानी *******

ग्रामीण महिलाओं ने नीमच में खोला 'दीदी कैफे' - अपना और अपने परिवार का कर रही भरण पोषण

नीमच, 19 जुलाई गुरु एक्सप्रेस। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी स्व-सहायता समूहों के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं को आत्म-निर्भर एवं स्वावलंबी बनाने की दिशा में विशेष प्रयास कर रही हैं। इसी उद्देश्य से राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन एवं मध्यप्रदेश राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन द्वारा संचालित 'दीदी कैफे' ग्रामीण महिलाओं की आय बढाने का साधन बन रहे हैं। स्व-सहायता समूह के माध्येम से ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार हो रहा है। साथ ही उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा मानसम्मोन भी बढ रहा हैं। प्रदेश के साथ ही नीमच जिले में भी दीदी कैफे ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं द्वारा संचालित किया जा रहे है। दीदी के हाथों से बने नाश्ते और चाय, कॉफी का स्वाद, उनके स्वावलंबन, सशक्तिकरण और आत्मनिर्भरता का अनुभव कराता है। अपने प्रयासों से, ये दीदीयाँ अपनी उद्यमशीलता की भावना और सामुदायिक विकास के प्रति प्रतिबद्धता भी प्रदर्शित कर रही है।

नीमच संयुक्त् जिला कलेक्टर कार्यालय भवन परिसर में ग्राम कनावटी के जय बालाजी आजीविका स्व सहायता समूह की कुछ सदस्य महिलाओं द्वारा ''दीदी कैफे'' संचालित किया जा रहा है। यहां कलेक्टर कार्यालय आने वाले लोगों को अनुकूल वातावरण में चाय नाश्ता बडे ही आत्मीय भाव से मिल रहा है। दीदी के हाथों से बनी चाय और नाश्ता ग्राहकों को एक अलग ही तृप्ति का अहसास कराता है। एक ओर दीदियां जहां दीदी कैफे संचालित कर महिला सशक्तिकरण का उदाहरण प्रस्तुत कर, आत्मनिर्भर बन रही है, वहीं दूसरी और महीने के 15-20 हजार रुपए कमा कर, अपने परिवार की आर्थिक स्थिति सुदृढ बनाने में भी अपना योगदान दे रही है। इस समूह की कुछ महिलाएं यह दीदी कैफे संचालित कर रही है वहीं शेष सदस्य महिलाएं सिलाई, पशुपालन जैसे काम कर स्वावलंबी बन परिवार में अपना योगदान दे रही है। दीदी कैफे की संचालिका एवं जय बालाजी आजीविका स्व सहायता समूह की अध्यक्ष मधु खोईवाल ने बताया कि वह समूह में जुडने से पहले में हाउसवाइफ (गृहिणी) थी, समूह में गांव की 15 महिलाएं जुडी हुई है। समूह की दीदियों ने पहले 100-100 रुपये की बचत की फिर समूह की गतिविधियों को देख एन.आर.एल.एम.की तरफ से समूह को 20 लाख का ऋण प्रदान किया। समूह को कलेक्टर कार्यालय में दीदी कैफे संचालित करने के लिए प्रोत्साहित किया गया, जिससे प्रेरित होकर एन.आर.एल.एम. के सहयोग से हमने यह दीदी कैफे संचालित किया। इसमें हम 5-6 दीदियां मिलकर काम करती है। बाकी दीदियां कोई पशुपालन तो कोई सिलाई कार्य कर रही है। जिससे सबके परिवार का भरण पोषण अच्छे से चल रहा है। एसबीआई बैंक की कनावटी शाखा से हमारे समूह को लोन हुआ है इसके लिए मैं माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी और मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव जी को धन्यवाद देना चाहती हूं। दीदी कैफे पर आने वाले नीमच निवासी ग्राहक श्री महावर ने बताया, कि हम यहाँ कलेक्टर कार्यालय अक्सर आते है, यहां पर दीदी कैफे में चाय नाश्ता करने के लिए आ जाते है। यहां का वातावरण काफी अच्छा है, साफ सफाई एवं स्वच्छता है। यहां पर दीदियां चाय कॉफ़ी बनाती है। यहां एक अच्छा माहौल है।

मप्र शिक्षक कांग्रेस के पदाधिकारियों का विधायक विपिन जैन ने किया सम्मान

मंदसौर, 19 जुलाई गुरु एक्सप्रेस। मध्य प्रदेश शिक्षक कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष हरीश नामदेव ने बताया कि इस वर्ष हज यात्रा में मध्य प्रदेश के लगभग हज इंस्पेक्टर के रूप में लगभग 50 कर्मचारियों ने अपनी सेवाएं प्रदान की। कर्मचारियों में शिक्षा विभाग में सेवा देने वाले मध्य प्रदेश शिक्षक कांग्रेस उज्जैन संभाग के दिन पदाधिकारी सबसे श्रेष्ठ कार्य करने में अपनी भूमिका का निर्वहन किया।

जिनमें मध्य प्रदेश शिक्षक कांग्रेस की प्रदेश महामंत्री सुश्री सलमा साहब के साथी मध्य प्रदेश शिक्षक कांग्रेस भानपुरा ब्लॉक अध्यक्ष मजहर अली एवं जावरा के तहसील सचिव चांद मोहम्मद ने भी अपनी अग्रणी भूमिका निभाई है। उनकी हज यात्रियों के प्रति की गई सेवा समर्पण की भावना के साथ ही उनका भी हज उन्होंने पूर्ण किया इस कठिन यात्रा में पूरी तरह से हज यात्रियों की सेवा करने में तन मन से लग रहे उनके इस त्याग समर्पण को देखते हुए मध्य प्रदेश शिक्षक कांग्रेस जिला संगठन मंदसौर द्वारा होटल डायमंड में सम्मान समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में मंदसौर विधायक विपिन जैन, विशेष अतिथि श्री सुरेश शर्मा, पूर्व जिला अध्यक्ष पूर्व प्रांतीय उपाध्यक्ष बाबूलाल भीरमा भी उपस्थित थे, कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रदेश संगठन प्रभारी महंत एनडी वैष्णव ने की। तीनों हज इंस्पेक्टर के साथ ही मध्यप्रदेश शिक्षक कांग्रेस में अपनी लंबी सेवाएं दे रहे हैं 31 जुलाई को सेवानिवृत हो रहे श्रीपाल जैन नीमच को भी सम्मानित किया गया। सर्वप्रथम अतिथियों का स्वागत कार्यकारी प्रांत अध्यक्ष हरीश नामदेव, संभाग के अध्यक्ष राजेश पांडे, जिला अध्यक्ष रोशन बाबू नीलगर ,जिला सचिव कमल राठौर, कार्यकारी जिला अध्यक्ष शैलेंद्र सिंह मंदसौर ब्लॉक अध्यक्ष गोपाल आंजना आदि के किया। साथ ही शिक्षक कांग्रेस के उपस्थित सभी पदाधिकारियो ने किया। कार्यक्रम का सफल संचालन मल्हारगढ अध्यक्ष बीएस शक्तावत ने किया एव आभार प्रदर्शन जिला सचिव कमल राठौर ने किया।

मंदसौर मंडी भाव

उपज	आवक बोरी में	न्यूनतम	अधिकतम
मक्का	25	2100	2377
उडद	29	4100	6075
सोयाबीन	4424	3600	4413
गैहु	3844	2500	2951
चना	203	5400	6000
मसुर	66	5701	7160
धनिया	44	5555	7000
लहसुन	16500	1500	9000
मैथी	371	3350	5547
मुंगफली	629	4180	5380
अलसी	903	6811	7381
सरसो	190	6680	7300
तारामीरा	5	4000	5250
इसबगोल	46	7780	11400
प्याज	3100	350	1300
कलोंजी	8	18600	20502
तुलसी बीज	13	10400	13400
डॉलर	29	6011	8601
तिल्ली	197	6450	9251
जौ	53	2101	2321
मटरसुखी	11	2424	4444
असालीया	5	5700	6521
चियाबीज	18	14000	18351

अतिक्रमण हटाया...

गांधी चौराहा से महाराणा प्रताप चौराहा, रामटेकरी रोड पर सीएम हेल्पलाइन शिकायत के चलते रोड से अस्थाई अतिक्रम हटाने की कार्यवाही नगरपालिका ने शनिवार को अवकाश के दिन में भी की।

कैलास पर्वत के दक्षिण हिस्से से बर्फ गायब, पांच साल में हो रहे बदलाव से बड़ी टेंशन

नईदिल्ली, 19 जुलाई। कैलास पर्वत के दक्षिणी हिस्से से बर्फ गायब हो गई है। इसे लेकर चिंता बढ़ गई है। पिछले पांच सालों में लगातार कैलास पर्वत में बदलाव देखने को मिल रहे हैं। 2024 में भी ओम पर्वत पर बर्फ विहीन हो गई थी।

कैलास पर्वत के दक्षिणी हिस्से में इस बार बर्फ नहीं दिखी। शुक्रवार को कैलास मानसरोवर यात्रा से लौटे पहले दल ने यह जानकारी दी। यात्रा दल के एलओ एवं आईटीबीपी के एडीजी संजय गुंज्याल ने भी पांच साल में आए बदलावों पर चिंता जताई है।

पांच साल बाद शुरू हुई कैलास मानसरोवर यात्रा–पिथौरागढ़ से पांच साल बाद शुरू हुई कैलास मानसरोवर यात्रा का पहला 45 सदस्यों का दल भारत लौट आया है। शुक्रवार देर शाम साढ़े सात बजे यात्री धारचूला पहुंचे। जयपुर निवासी राजेश नागपाल ने बताया कि कैलास पर्वत के दक्षिण हिस्से में बर्फ नहीं थी। बाकी हिस्सों में भी बर्फ कम हुई है। एलओ संजय गुंज्याल ने बताया कि वर्ष 2016 में भी उन्होंने कैलास मानसरोवर की यात्रा की थी। तब दक्षिणी क्षेत्र में बर्फ अधिक देखने को मिली, लेकिन इस बार बर्फ बहुत कम था।

ओम पर्वत भी 2024 में हो गया था बर्फ विहीन–इससे पहले अगस्त 2024 में भी ओम पर्वत भी बर्फ पिघलने से काला नजर आया था। तब पहली बार ओम पर्वत बर्फ विहीन नजर आया। हालांकि, इसके दो-तीन दिन के भीतर ही मौसम का मिजाज बदला और ओम पर्वत में बर्फबारी हो गई थी। इससे पहले 2014 और 2018 में भी ओम पर्वत पर बर्फ कम हुई थी।

बर्फ का गायब होना सामान्य नहीं– विशेषज्ञों के अनुसार, कैलास पर्वत की ऊंचाई 21778 फीट है और यहां सामान्यतः सालभर बर्फ रहती है। चोटी के दक्षिणी हिस्से से बर्फ का गायब होना सामान्य नहीं है। कैलास पर्वत पर लगभग 18,000 फीट से ऊपर स्थायी हिम रेखा मानी जाती है। इस ऊंचाई के ऊपर की पूरी चोटी पर गर्मी में भी बर्फ जमी रहती है। सर्दियों में बर्फ की मोटाई लगभग 15,000 फीट तक फैल जाती है।

चित्रगुप्त कथा हेतु कायस्थ समाज की बैठक आज

मंदसौर, 19 जुलाई गुरु एक्सप्रेस। कायस्थ समाज अध्यक्ष शैलेन्द्र माथुर ने बताया कि जगतगुरु श्री चित्रगुप्ताचार्य (डॉ. स्वामी सच्चिदानंद चित्रगुप्त) द्वारा दिव्य संगीतमय श्री चित्रगुप्त कथा मन्दसौर में की जाना है। इस सम्बंध में एक बैठक आज 20 जुलाई, रविवार को सुबह 11 बजे श्री भगवान चित्रगुप्त मंदिर पर रखी गई है। बैठक में कथा संबंधी सुझाव दिये जाना है। बैठक में मंत्र लेखन के राष्ट्रीय संयोजक श्री नरेन्द्र श्रीवास्तव (नीमच) भी उपस्थित रहेंगे। बैठक पश्चात प्रातः 11.30 बजे भगवान श्री चित्रगुप्त जी की रविवारीय आरती आयोजित होगी। कायस्थ समाज अध्यक्ष शैलेन्द्र माथुर ने सभी समाजजनों से बैठक एवं आरती में उपस्थित रहने का आग्रह किया है।

स्काउट/गाइड की जिला बैठक में हज इंस्पेक्टर सलमा शाह का सम्मान

मंदसौर, 19 जुलाई गुरु एक्सप्रेस। स्काउट गाइड जिला प्रवक्ता उमर शेख ने बताया कि मध्य प्रदेश भारत स्काउट गाइड जिला संघ की बैठक जिला मुख्य आयुक्त अंशुल बैरागी एवं टेरेसा मिंज जिला शिक्षा अधिकारी जिला गाइड कमिश्नर की उपस्थिति में संपन्न हुई।

जिसमें वर्षभर आयोजित की जाने वाली गतिविधियों पर चर्चा की गई साथ ही वार्षिक आय व्यय एवं विभिन्न प्रशिक्षणों पर चर्चा की गई, 5 सितंबर को शिक्षक दिवस पर जिले में प्रतिभावान श्रेष्ठ शिक्षकों को एवं सेवानिवृत्तियों शिक्षकों को सम्मानित करने का निर्णय भी लिया गया। स्काउट गाइड के एडवांसमेंट का प्लान भी बनाया गया जिले के समस्त शासकीय अशासकीय मान्यता प्राप्त विद्यालय के साथ ही राष्ट्रीय मुख्यालय नई दिल्ली से प्राप्त आदेशों को अनुसार सीबीएसई द्वारा मान्यता प्राप्त संचालित विद्यालयों में भी स्काउट गाइड जलने का निर्णय लिया गया। ओपन ट्रुप शीघ्र ही गठित किए जाने का आदेश जारी किए गए। उनके साथ ही जिला सचिव सलमा शाह स्टेट हज इंस्पेक्टर ने इस वर्ष हज यात्रियों की सेवा के लिए 40 दिन तक

हज यात्रा में लगभग 498 हज यात्रियों की सेवा की एवं अपना हज भी पूर्ण किया। उनकी अप्रतिम सेवाओं को देखते हुए जिला संघ द्वारा उन्हें सम्मानित भी किया गया।

कार्यक्रम में विकासखंड स्काउट अध्यक्ष डॉ. आशीष खिमेसरा, जिला एडीपीसी श्री लोकेंद्र डाभी, जिला योजना अधिकारी दिलीप कुमार मुजावदिया, जिला रोवर्स कमिश्नर राज्य कार्यकारिणी परिषद राज्य परिषद सदस्य एनडी वैष्णव, कब कमिश्नर हरीश नामदेव, विकासखंड स्काउट प्रभारी मंदसौर मोहम्मद उमर शेख, सीतामऊ किशोर बैरागी, मल्हारगढ़ कमल राठौर, गरोठ राजेश कुमार पांडे, भानपुरा हरीश नामदेव, जिला सचिव सुश्री सलमा शाह, स्काउट डीओसी मनीष पाटीदार के साथ ही सुखदेव बोरीवली, शैलेंद्र सिंह पंवार, जीएल जोकचंद, श्रीमती अनीता सिंगार, श्रीमती चंद्र ज्योति नकवाल, श्रीमती प्रगति पाटीदार, श्रीमती प्रतिभा भटनागर, वीरेंद्र सिंह शक्तावत, पीटर भूरिया, मोहनलाल सिंधी, रामनिवास पाटीदार, रोशन बाबू नीलगर, दीपेंद्र शर्मा ,अर्जुन परिहार ,सुरेश भावसार आदि उपस्थित रहे।

बद्रीलाल तेलकार पंचतत्व में विलीन

विभिन्न संगठनों, पत्रकारों, जनप्रतिनिधियों व गणमान्य नागरिकों ने दी श्रद्धांजलि

पिपलियामंडी, 19 जुलाई गुरु एक्सप्रेस। नगर के वरिष्ठ नागरिक व पत्रकार परिवार से जुड़े श्री बद्रीलाल तेलकार का 78 वर्ष की आयु में शनिवार को निधन हो गया। वे पत्रकार रमेश तेलकार के बड़े भाई, दीपक तेलकार के पिता तथा ओमप्रकाश व पत्रकार जेपी तेलकार के बड़े पिता थे। विगत कुछ समय से वे अस्वस्थ थे। उनके निधन का समाचार मिलते ही नगर में शोक की लहर फैल गई। शनिवार को स्टेशन रोड स्थित निवास से उनकी अंतिम यात्रा निकली, जिसमें नगर के समाजसेवी, जनप्रतिनिधि, व्यापारी, पत्रकार, शिक्षाविद् तथा गणमान्य नागरिक बड़ी संख्या में शामिल हुए। मुक्तिधाम में आयोजित शोकसभा में वक्ताओं ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके सरल और मिलनसार व्यक्तित्व को याद किया। श्रद्धांजलि सभा में भाजपा के पूर्व जिलाध्यक्ष मानसिंह माछोपुरिया, किसान नेता श्यामलाल जोकचन्द, ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष अनिल शर्मा, नगर परिषद उपाध्यक्ष भारतसिंह सोनगरा, नगर परिषद के पूर्व अध्यक्ष चोथमल गुप्ता, भाजयुमो प्रदेश सदस्य संदीपसिंह राठौड़, उद्योगपति अशोक कुमठ एवं धनेश पटेल, अंजुमन सदर व अभिभाषक संघ के पूर्व अध्यक्ष एम. सय्यद मंसूरी, चिकित्सक डॉ. अरुण मूंदड़ा, जनपद सदस्य प्रकाश राठौर, प्रेस क्लब अध्यक्ष जगदीश पंडित, गैसेवा संघ के राष्ट्रीय संगठन मंत्री दिलीप धनराज गुप्ता, कर सलाहकार वीरेन्द्र राणावत, शिक्षाविद् भगवतीप्रसाद गेहलोत, जिला पंचायत के पूर्व सदस्य अशोक खिंची, नारायणगढ़ नगर परिषद के पूर्व अध्यक्ष रामचंद्र करुण, पार्षद ललित केसरा, सरफराज मेव, मुकेश निडर, पूर्व पार्षद अनिल बोराना, कमल परसिंधिया, मनोहर पालीवाल, पत्रकार राजेश शर्मा, नरेन्द्र राठौर, राजेश फरक्या, सरपंच ईशु धनगर, पूर्व सरपंच श्यामलाल लकुम, प्रधान आरक्षक राजवीरसिंह यादव, शारदा विद्या मंदिर संचालक ओमप्रकाश गेहलोत, प्रेरणा स्कूल संचालक नरेन्द्र पाटीदार, रमेश पाटीदार, निर्मलकुमार गर्ग, कमलेश भूत, मानसिंह चौहान, गोपाल पाटीदार, पंकज बोराना, राधेश्याम सैनी, नरेश जजवानी, कुंजीलाल पाटीदार, जितेन्द्र खिंदावत, मनोहर सोनी, किशोर उणियारा, महेश अग्रवाल, दिनेश बम्बोरिया सहित बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। सभी ने दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करते हुए शोक संतप्त परिवार को सांत्वना दी। कार्यक्रम का संचालन पूर्व पार्षद हरिप्रसाद गेहलोत ने किया।

गेहूं भंडारण की अधिकतम सीमा तय, थोक व्यापारी 3000 टन से ज्यादा नहीं रख सकेंगे

भोपाल, 19 जुलाई गुरु एक्सप्रेस। गेहूं के भाव को नियंत्रित करने के लिए भारत सरकार ने अधिकतम भंडारण की सीमा निर्धारित कर दी है। मध्य प्रदेश में भी इसके अनुरूप अब व्यापारी और थोक विक्रेता तीन हजार टन से अधिक गेहूं का भंडारण (wheat stock MP) नहीं कर पाएंगे। फुटकर व्यापारियों के लिए यह सीमा 10 टन की रहेगी। यह भंडारण सीमा 31 मार्च 2026 तक प्रभावी रहेगी।

आम आदमी पार्टी मंदसौर के जिला प्रभारी का दौरा कल

मंदसौर, 19 जुलाई गुरु एक्सप्रेस। आम आदमी पार्टी मध्यप्रदेश के प्रदेश नेतृत्व व प्रदेश प्रभारी के निर्देशानुसार मंदसौर जिला इकाई के अंतर्गत 21जुलाई को दोपहर 2 बजे जिला कार्यालय पर विशेष कार्यकर्ता संवाद का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें जिला प्रभारी श्री इंद्र विक्रमसिंह एवं जिला सह प्रभारी भंवरसिंह पवार कार्यकर्ताओं से संवाद करेंगे एवं संगठनात्मक दिशा-निर्देश, आगामी कार्य योजनाएं एवं संगठन विस्तार पर विचार-विमर्श होगा। जिसमें जिले के समस्त आप कार्यकर्तागण शामिल होंगे, मंदसौर जिला अध्यक्ष यशवंत धाकड़ ने सभी नागरिक बंधुओ को उक्त कार्यकर्ता संवाद में शामिल होने के लिए आग्रह किया है।

✻ अंतिम यात्रा ✻

पारस मल एवं अजय कुमार की पूज्य माताजी, बलवंत सिंह, दिलीप कुमार, अजित कुमार, सुनील कुमार, अनिल कुमार की बड़ी माताजी संजय कुमार सनत कुमार आदेश की दादीजी,और महाक्ष की परदादीजी, स्व.श्री मांगीलालजी फाफरिया की धर्मसहयिका श्रीमती भागवंती बाई फाफरिया का अरिहंत शरण हो गया है, जिनकी अंतिम यात्रा 20 जुलाई2025 रविवार को प्रातः 11 बजे निज निवास शहनाई गार्डन के पास हनुमान नगर से शव वाहन द्वारा मुक्ति धाम ले जाया जाएगा।

✻✻✻ शोकाकुल ✻✻✻
फाफरिया परिवार, मन्दसौर

✻ उठावना ✻

हमारे बड़े भाई साहब, दीपक के पिताजी, ओमप्रकाश, जयप्रकाश, प्रहलाद, नरेन्द्र व नाना के बड़े पापाजी, विरल, हार्दिक, प्रतीक के दादाजी श्री बद्रीलाल तेलकार का निधन हो गया है।

उठावना 20 जुलाई 2025 रविवार को प्रातः 10 बजे रेलवे स्टेशन मार्ग, नगर परिषद् के पास गोपाल धर्मशाला पर रखा गया है।

✻✻✻ शोकाकुल ✻✻✻
रमेश तेलकार, किशनलाल तेली, कसोदनिया परिवार, पिपलिया स्टेशन, तहसील मल्हारगढ, जिला मन्दसौर, मप्र
फर्म–तेलकार न्यूज एजेंसी, तेलकार फोटोकॉपी एन्ड कोरियर, रमेश जनरल स्टोर्स, पिपलिया स्टेशन
मो.–9425441810, 9406671143, 9303273037

सहकारिता के माध्यम से पौधारोपण किया

मंदसौर, 19 जुलाई गुरु एक्सप्रेस। अंतराष्ट्रीय सहकारिता वर्ष–2025 के उपलक्ष्य में पैक्स नाहरगढ़ द्वारा गुरू कमल गौशाला प्रागंण नाहरगढ़ एवं संस्था परिसर नाहरगढ़ में वृक्षारोपण का कार्यक्रम आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री आर.के. गंगले विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी म.प्र. राज्य सहकारी बैंक भोपाल, श्री परमानंद गोडरिया उपायुक्त सहकारिता जिला मंदसौर, श्री सुनिल कच्छारा मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला सहकारी बैंक मंदसौर, श्री आदित्य पाटीदार इफकों प्रतिनिधि, जनप्रतिनिधीगण व सहकारी बैंक के श्री मुकेश पालीवाल, श्याम बागोरा, प्रशान्त जैन, श्री गोपाल राठौर शाखा प्रबंधक एवं शाखा नाहरगढ़ एवं नाहरगढ़ से सम्बद्ध सहकारी संस्थाओं के अधिकारी एवं कर्मचारी सम्मिलित थे।

सहकारिता के माध्यम से जिले में गत02 माहसे एकपेड़मॉकेनाम के तहत वृक्षारोपण का कार्य किया जा रहा है। जिला बैंक मंदसौर एवं संस्थाओं के माध्यम से जिले में लगभग 1260 पौद्यारोपण का कार्य किया जा चुका है।

पूर्व संगठन मंत्री स्व. यादव को श्रद्धांजलि दी

मंदसौर, 19 जुलाई गुरु एक्सप्रेस। सरस्वती विहार शैक्षिक संस्थान व सरस्वती विद्या मंदिर सीबीएसई संजीत मार्ग मंदसौर परिवार ने श्रद्धांजलि सभा आयोजित कर विद्या भारती महाकौशल प्रांत के पूर्व संगठन मंत्री स्व. श्री ब्रह्मानंद यादव को श्रद्धांजलि व स्नेह सुमन अर्पित किये। श्रद्धांजलि सभा में सरस्वती विहार शैक्षिक संस्थान के समिति परिवार आचार्य परिवार एवं भैया बहिनों ने दिवंगत स्व. श्री ब्रह्मानंद यादव के द्वारा विद्या भारती और समाज के लिए किए गए अनुकरणीय कार्यों कों याद किया। तथा ईश्वर से प्रार्थना की कि वह इन महान आत्मा महान विभूति को अपने श्री चरणों में स्थान दें।

सामुदायिक पुलिसिंग : फोर लेन पर...

रात में खराब हुआ वाहन, पुलिस ने ठीक करवाकर भेजा

मंदसौर, 19 जुलाई गुरु एक्सप्रेस। सुवासरा क्षेत्र में बीती रात उज्जैन से कुछ लोग जिसमे 03 पुरुष 03 महिला रामगंजमंडी जाने के लिए गरोठ फोरलेन होकर गुजर रहे थे। रात लगभग 02 बजे सुवासरा थाना अंतर्गत 100 डायल को सूचना मिली कि कुछ लोग गरोठ- उज्जैन फोरलेन पर चार पहिया वाहन आर्टिगा के टायर खराब होने की वजह से मुसीबत में है। एफआरवी 14 थाना सुवासरा जिला मन्दसौर के 100 डायल पायलट महेश रामठा एवं आरक्षक बनवारी सालवी मौके पर पहुंचे। यहां अर्टिगा चार पहिया वाहन से जा रहे लोगों से बातचीत के बाद खराब हुए टायर को सुवासरा लाया गया एवं दुकानदार को ढूंढकर उससे टायर ठीक करने की अपील की। दुकानदार ने उठकर दुकान खोली और टायर ठीक किया तब तक सुबह की लगभग 4:30 बज चुकी थी। सुबह 5:00 बजे पंचर टायर को ठीक करके 20 किमी दूर गरोठ - उज्जैन फोरलेन पहुंचे एवं संबंधित को टायर लगाकर सभी को रवाना किया गया। 100 डायल सूचनाकर्ता अनीता वर्मा, राजाराम वर्मा रामगंजमंडी एवं परिजनों ने जाते हुए आरक्षक बनवारी वर्मा एवं पॉयलट महेश रामठा का धन्यवाद ज्ञापित किया।

सांई पब्लिक स्कूल दलौदा की बस दुर्घटना मामले में दोषियों पर कार्यवाही व अन्य स्कूल बसों की जांच हो

अभाविप ने पुलिस अधीक्षक के नाम ज्ञापन देकर की मांग

मंदसौर, 19 जुलाई गुरु एक्सप्रेस। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद मंदसौर नगर इकाई के प्रतिनिधि मण्डल ने पुलिस अधीक्षक के नाम एक ज्ञापन देकर साई पब्लिक स्कूल दलौदा की बस दुर्घटना मामले में दोषियों पर कार्यवाही की मांग की।

ज्ञापन में कहा कि 19 जुलाई को साई पब्लिक स्कूल दलौदा की बस लदुसा मार्ग पर अनियंत्रित होकर दुर्घटना हो गई। जिसमें तीन विद्यार्थी घायल हुए और अन्य छात्र-छात्राएं बाल-बाल बचे है। इस घटना ने विद्यालय प्रशासन की गंभीर लापरवाही को उजागर किया है।

जांच में सामने आया है कि विद्यालय के वाहन में निम्न आवश्यक सुरक्षा संसाधन नहीं थे, विद्यालय बस में सीसीटीवी कैमरे स्थापित नहीं है, फर्स्ट एड बॉक्स (प्राथमिक उपचार किट) का अभाव था। वाहन चालक की पृष्ठ भूमि लाइसेंस व मेडिकल, फिटनेस की जानकारी संदिग्ध है। बस की स्थिति जर्जर व असंतुलित है। बस में महिला अटेंडेंट, सहायक, सुरक्षा स्टाफ उपस्थित नहीं था। बस में छात्र-छात्रों की संख्या अधिक थी। जो सुरक्षा नियम को उल्लंघन को दर्शाता है।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, मंदसौर नगर इकाई मांग की कि आज की दुर्घटना के लिए विद्यालय प्रबंधक पर कार्यवाही की जाए, सभी स्कूल बसों की यातायात नियमों के अनुसार जांच की जाएं, जिन वाहनों के कैमरे फर्स्ट एड बॉक्स सहायक स्टाफ नहीं है उन्हे तत्काल जप्त की जाएं। वाहन चालकों के लाइसेंस पुलिस वेरिफिकेशन व मेडिकल रिपोर्ट अनिवार्य की जाएं, भविष्य में ऐसी घटना न हो इसके लिए विद्यालय को सुरक्षा नीति लागू करने हेतु बाध्य किया जाएं। ज्ञापन में कहा कि एक सप्ताह के अन्दर उचित कार्यवाही न होने पर और जिले में संचालित सभी विद्यालय बसों की जांच न होने पर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद आंदोलन करेगी।

एक पौधा मां के नाम अभियान अंतर्गत हुआ पौधारोपण

मनासा, 19 जुलाई गुरु एक्सप्रेस। शासकीय रामचंद्र विश्वनाथ महाविद्यालय मनासा, जिला नीमच में आज दिनांक 19 जुलाई 2025 को प्राचार्य डॉक्टर एम एल धाकड़ के नेतृत्व में इको क्लब प्रभारी प्रोफेसर मुकेश मालवीय, 'एक पौधा माँ के नाम अभियान' प्रभारी डॉ. ममता बसेर, डॉ. जगदीश विजयवर्गीय, प्रोफेसर आशा पटेल एवं अन्य स्टाफ और महाविद्यालय के विद्यार्थियों की, उपस्थिति में महाविद्यालय प्रांगण में 'एक पेड मां के नाम' अभियान के अंतर्गत पौधारोपण किया गया, विद्यार्थियों ने अशोक बेल, सहजन, कनेर आदि के पौधे महाविद्यालय में लगाए गये, इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य एवं जन भागीदारी समिति के अध्यक्ष अश्विन सोनी ने महाविद्यालय प्रांगण में पौधे लगाकर अभियान की शुरुआत की विद्यार्थियों ने उत्साह पूर्वक यह अभियान में सहभागिता की एवं लगाए गए पौधों की सुरक्षा का संकल्प लिया तथा प्रकृति संरक्षण की शपथ ली।

मुठभेड़ में 6 नक्सली ढेर, भारी मात्रा में हथियार बरामद

नारायणपुर, 19 जुलाई। छत्तीसगढ़ के नारायणपुर जिले में सुरक्षा बलों ने एक बड़ी कार्रवाई करते हुए कम से कम छह नक्सलियों को मार गिराया है। पुलिस ने इस संबंध में जानकारी दी है। एक वरिष्ठपुलिस अधिकारी ने बताया कि अबूझमाड़ क्षेत्र के जंगल में शुक्रवार दोपहर उस समय मुठभेड़ शुरू हो गई जब सुरक्षा बलों और नक्सलियों का आमना-सामना हो गया। सुरक्षा बलों ने इलाके में नक्सलियों की मौजूदगी की खुफिया सूचना मिलने के बाद एक संयुक्त अभियान चलाया था। अधिकारी ने बताया कि सुरक्षा बलों और नक्सलियों के बीच हुई गोलीबारी के बाद मुठभेड़ स्थल से अब तक छह नक्सलियों के शव बरामद किए गए हैं। इसके अतिरिक्त, मौके से एके-47/एसएलआर राइफलें, अन्य हथियार, विस्फोटक सामग्री और दैनिक उपयोग की कई वस्तुएं भी बरामद हुई हैं। पुलिस अधिकारी ने यह भी बताया कि इलाके में अभी भी सर्च ऑपरेशन जारी है।

वेद मंत्रों के बिना आत्मा का कल्याण नहीं होता हैं-रुद्र देवजी त्रिपाठी

नीमच, 19 जुलाई गुरु एक्सप्रेस। वेद मंत्रों में बहुत शक्ति होती है। वेद मंत्रों से जहरीले सांप का विष भी उतर जाता है और घायल व्यक्ति स्वस्थ हो जाता है। वेद मंत्रों के बिना कोई भी पूजा पूरी नहीं होती है। वेद मंत्रों के बिना आत्मा का कल्याण नहीं होता है। वेद मंत्र सभी के लिए कल्याणकारी होते है। यह बात गुरुदेव रुद्रदेव जी त्रिपाठी (जावद वाले) ने कहीं।वे श्री हरि सत्संग मंडल एवं भक्तगण के तत्वाधान में गोमाबाई रोड स्थित लायन्स डेन सभागार में 11 जुलाई से 6 अगस्त तक आयोजित 27 दिवसीय संगीतमय श्री शिव महापुराण कथा एवं पर्वतीय शिवलिंग पूजन अभिषेक एवं रुद्राक्ष वितरण कार्यक्रम में बोल रहे थे उन्होंने कहा कि पति के सम्मान के बिना पत्नी का कोई महत्व नहीं होता है। पुरुष के बिना नारी का जीवन अधूरा होता है। सती माता के टुकड़े जहां-जहां पूरे देश में गिरे वहां 52शक्तिपीठ का निर्माण हो गया। माता सती ने योग के द्वारा स्वयं का अग्नि दाह

कर प्राण त्याग दिए थे। यदि कोई भी हवन यज्ञ या मांगलिक आयोजन किसी दूसरे को नीचा दिखाने के लिए किया जाता है तो वह कार्यक्रम कभी सफल नहीं होता है। जो महादेव के शरण में जाता है वह भवसागर से पर हो जाता है।मृत संजीवनी महामृत्युंजय मंत्र जाप करने से मृत्यु भी टल जाती है। प्राचीन काल में विज्ञान कितना विकसित था गणेश जी को हाथी का सर तथा दक्ष प्रजापति को बकरे का सर लगा दिया था और प्राण संचार कर दिए थे।शिव महापुराण पोथी पूजन आरती में योगेश ओझा, घनश्याम सेठिया, बाबूलाल गुप्ता, मुकेश पोरवाल, जगदीश माहेश्वरी, जगदीश खंडेलवाल, कमल उपाध्याय, दिलीप दुबे, विजय जोशी, मधु शर्मा, राजु शर्मा, इंदिरा उपाध्याय, मंजू व्यास, मीणा धनोतिया, बीएल धनोतिया हेमा जोशी, मालती सोनार ,आर एन कदवा ,गोपाल व्यास, अशोक जोशी जावद, भजन गायक बंटी कुमानी,आदि बड़ी संख्या में श्रद्धालु भक्त उपस्थित थे। आरती के बाद प्रसाद वितरण किया गया। कार्यक्रम की श्रृंखला में सुबह 8 से 8:30 बजे तक वेद पाठ, 9 से 10 बजे तक हवन ,दोपहर 1 से 3 बजे शिव पुराण कथा, 3 से 4:30 बजे तक 27हजार रुद्राक्ष शिवलिंग पूजन अभिषेक, सोमवार नागपंचमी, प्रदोष, हरियाली अमावस्या पर पार्थिव पूजन अभिषेक,सवालाख महामृत्युंजय मंत्र जाप, काल सर्प पूजन हवन शांति सहित विभिन्न धार्मिक अनुष्ठान आयोजित किए जाएंगे।

शिव पार्वती विवाह प्रसंग आज– शिव महापुराण कथा में आज रविवार को शिव पार्वती विवाह के प्रसंग पर महाराज श्री त्रिपाठी जी वर्तमान परिपेक्ष में महत्व प्रतिपादित करेंगे। इस अवसर पर शिव पार्वती की झांकी सजाई जाएगी। लया। गुरुदेव त्रिपाठी ने बच्चे को दुपट्टा पहनाकर सम्मान किया।

स्वत्वाधिकारी, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक आशुतोष नवाल के लिए गुरु मीडिया एण्ड इंटरटेनमेन्ट कम्पनी, शक्ति नगर मन्दसौर से मुद्रित एवं 77 लक्ष्मीनगर, वेदान्त विहार मन्दसौर से प्रकाशित। (हर प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र मन्दसौर रहेगा) संपादक– आशुतोष नवाल RNI-MPHIN2006/20356
समाचार पत्र में छपे विज्ञापनों के लिए समाचार पत्र उत्तरादायी नहीं है एवं विज्ञापनो में प्रकाशित विचार विज्ञापनदाता की निजी राय है। इससे समाचार पत्र का कोई संबंध नहीं है। फोन 313880, मो. 9425105927,28 ashugurumds@gmail.com, ashu_guru2@yahoo.co.in